

ईश - वन्दना

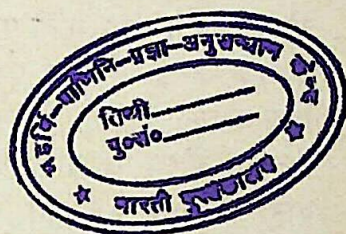


प्रार्थना

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में।
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में॥
यह विनती है पल-पल, क्षण-क्षण, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥
चाहे वैरी कुल संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥
चाहे कष्टों ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अँधेरा हो।
पर चित्त न मेरा डगमग हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥
चाहे कौंटों पर मुझे चलना हो, चाहे अग्नि में भी जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥
मेरी जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे॥
बस काम ये आठे याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥
मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में।
भगवान तुम्हारे चरणों में॥
यह विनती है पल-पल, क्षण-क्षण, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥



नित्य पाठावली



ॐ

हे जिह्वे रससारज्ञे
 सर्वदा मधुर प्रिये ।
 नारायणाख्य पीयूषं
 पिब जिह्वे निरन्तरम् ॥

ॐ

द्वितीय परिवर्धित संस्करण

१९९३ ई०

नम्र निवेदन—

स्व० नरेन्द्र भार्गव (बड़े भाई) स्व० पृथ्वीनाथ जी भार्गव के ज्येष्ठ पुत्र थे। आप सरल स्वभाव, धार्मिक विचार सहृदय तथा सबकी सेवा-भावना से ओत-प्रोत थे।

अपने पिता-श्री के निधन के बाद, परिवार में ज्येष्ठ होने के नाते कम आयु में ही परिवार और व्यवसाय का सारा बोझ आपके कंधों पर आ पड़ा। कठिनाइयों और उलझनों की झिन्ता किए बिना, वे निरन्तर प्रगति-पथ पर बढ़ते रहे। अल्पायु में ही पूरे परिवार को शोकाकुल कर अपना नश्वर शरीर दिनांक २६ जून, रविवार सन् १९८८ ई० को त्याग दिया।

उनकी वार्षिकी के अवसर पर सन् १९८९ ई० में एक छोटी-सी पाठावली (ईश-वन्दना) प्रकाशित की गयी थी, जो श्रद्धालु जनों की माँग के कारण देखते-देखते समाप्त हो गयी, फिर भी उसकी माँग निरन्तर बनी रही।

निरन्तर बढ़ती हुई माँग के कारण श्री मुन्नालाल मालवीय 'भरत' द्वारा सम्पादित, संशोधित एवं परिवर्धित द्वितीय संस्करण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। इसमें कई स्तोत्रों एवं उपयोगी बातों का समावेश किया गया है।

आशा है इसके पठन-पाठन से बड़े भाई की आत्मा को शान्ति मिलेगी और भगवद् भजन के द्वारा पाठकों को भगवान् की सामिप्यता का अनुभव होगा। भगवान् ने स्वयं कहा है—

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।

मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥

विनीत—

दिनांक : १७-६-९३

सुरेन्द्र भार्गव
वीरेन्द्र भार्गव
एवं समस्त परिवार।

ॐ

शान्ति पाठ

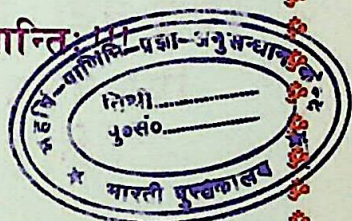
ॐ सहनाववतु । सहनौ भुनक्तु ।

सहवीर्यं करवाव है ।

तेजस्विना व धीतमस्तु ।

मा विद्विषाव है ।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!



मंगल कामना

ॐ समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।

समान मस्तु वो मनः यथा वः सुसहासति ॥

ॐ

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥

ॐ

प्रसन्न कारेषु सर्वोऽपि मुह्यति'

प्रसन्न मुद्रा में रहने वालों से
लोग खुश रहते हैं ।



प्रियं वदाः सर्वेषां सुखप्रदा भवन्ति

प्रिय वचन बोलने वाले लोग सबके
लिए सुख प्रद होते हैं ।



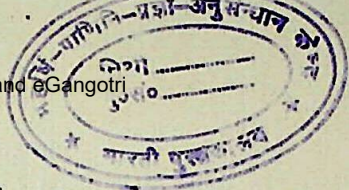
विमलमतिरमत्सरः प्रशान्त

शुचि चरितोऽखिल सत्त्व मित्रभूतः ।

प्रियहित वचनोऽस्त मानमायो

वसति सदा हृदि तस्य वासुदेव ॥





बड़े भाई की पूण्य स्मृति में



जन्म :
१७ जून, १९३८ ई०

स्व० नरेन्द्र भार्गव

मृत्यु :
२६ जून, १९८८ ई०

'मिलइ नं जगत सहोदर भ्राता'

नित्य पाठावली

प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त में उठकर नीचे लिखा मंत्र
बोलकर अपने हाथों की हथेलियों को देखना चाहिए ।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती ।

कर मूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ॥

इसके पश्चात् नीचे लिखी प्रार्थना कर पृथ्वी पर पैर
रखना चाहिए ।

समुद्र वसने देवि ! पर्वतस्तन मण्डले ।

विष्णु पत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व मे ॥

दैनिक-प्रार्थना

श्री गणेश वन्दना

गजाननं भूत गणादि सेवितं

कपित्थ-जम्बूफल-चारु-भक्षणम् ।

उमा सुतं शोक-विनाश-कारकं

नमामि विघ्नेश्वर-पाद-पङ्कजम् ॥

श्री सूर्य वन्दना

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णु तेज से ।

जगत्सवित्रे शुचये नमस्ते कर्मदायिने ॥

श्री शिव वन्दना

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम् ।

सदा वसन्तं हृदयार विन्दे भवंभवानी सहितं नमामि ॥

श्री देवी वन्दना

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।

शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोऽस्तुते ॥

श्री विष्णु वन्दना

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिमिध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भव-भयहरं सर्व लोकैकनाथम् ॥

सर्वरूपहरि वन्दना

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाण पटवः कर्तेति नैयायिकाः ।
अर्हन्तित्यथ जैन शासनरताः कर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वाञ्छित फलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ॥

श्री दशावतार रूप हरि वन्दना

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद् बिभ्रते
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते ।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण मातन्वते
म्लेच्छान् मूर्छयते दशाकृति कृते कृष्णाय तुभ्यं ॥

श्री परमात्म स्तुति

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्रमरुतः स्तुन्वति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साङ्ग पद क्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुर गणा देवाय तस्मै नमः ॥

श्री नवग्रह वन्दना

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्त कारी,
भानुः शशी भूमि सुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः,
सर्वेग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

श्री गुरु वन्दना

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

श्री विश्वनाथ वन्दना

गङ्गा तरंग रमणीय जटाकलापं
गौरी निरन्तर विभूषित वाम भागम् ।
नारायण प्रिय मनङ्ग सदापहारं
वाराणसी पुर पति भज विश्वनाथम् ॥

श्री शिव लिङ्ग वन्दना

ब्रह्म मुरारि सुरार्चित लिङ्गं
निर्मल भाषित शोभित लिङ्गम् ।
जन्मज दुःख विनाशक लिङ्गम्
तत्प्रणमामि सदा शिवलिङ्गम् ॥

श्री महामृत्युञ्जय मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिष्पुष्टि वर्द्धनम् ।
उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

श्री शिवा शिव वन्दना

मन्दारमालां कुलिताल कायै,
कपाल मालाङ्कित शेखराय ।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय,
नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥

श्री राम वन्दना

आपदामप हर्तारं दातारं सर्व सम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयोभूयो नमाम्यहम् ॥

रामाय राम भद्राय रामचन्द्राय वेध से ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

श्री हनुमान वन्दना

मनोजवं मारुत-तुल्य वेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं बानर यूथ मुख्यं
श्री रामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

श्री कृष्ण वन्दना

वसुदेव-सुतं देवं कंस-चाणूर-मर्दनम् ।
देवकी-परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

श्री बालकृष्ण वन्दना

करारविन्देन पदार विन्दं
मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं
बालं मुकुन्दं मनसास्मरामि ॥

श्री कालभैरव वन्दना

देवराज्य सेव्यमान पावनाङ्घ्रि पङ्कजं
व्याल यज्ञ सूत्र मिन्दु शेखरं कृपा करम् ।
नारदादि योगिवृन्द बन्दितं दिगम्बरं
काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥

श्री दुर्गा वन्दना

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥

श्री काली वन्दना

काली काली महाकाली कालिके परमेश्वरी ।
सर्वानन्द-करे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥

श्री महालक्ष्मी वन्दना

महालक्ष्मि ! नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि ।
हरि प्रिये ! नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥

श्री अन्नपूर्णा वन्दना

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर-प्राण-वल्लभे ।
ज्ञान-वैराग्य-सिद्धार्थं भिक्षां देहि च पार्वती ॥

श्री सरस्वती वन्दना

शुक्लां ब्रह्म-विचार-सार-परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणा पुस्तक-धारिणीम् भयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

श्री जानकी वन्दना

उद्भवस्थिति संहार कारिणीं क्लेश हारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करिणीं सीतां न तोऽहं रामवल्लभाम् ॥

श्री राधिका वन्दना

त्रैलोक्य पावनीं राधा सन्तोऽसेवन्त नित्यशः ।
यत्पादपद्मे भक्त्यार्घ्यं नित्यो कृष्णो ददाति च ॥

श्री संकटा वन्दना

नमोकाशिनी वाशिनीगंगतीरे
सदा अर्चितं चन्दनं रक्त पुष्पम् ।
सदावन्दितं पूजितं सर्व देवं
नमो संकटा कष्ट हरणी भवानी ॥

श्री विन्ध्येश्वरी वन्दना

निशुंभ शुंभ मर्दिनी प्रचण्ड मुंड खंडनीं ।
वने रणे प्रकाशिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम् ॥

श्री शीतला वन्दना

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता ।
शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः ॥

श्री गायत्री वन्दना

गायत्री वेद जननी गायत्री पाप नाशिनी ।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चैह च पावनम् ॥

श्री गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गोदेवस्यधीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

श्री गीता वन्दना

गीता शास्त्रमिदं पुण्यं यः पठेत्प्रयतः पुमान् ।
विष्णोः पद मवाप्नोति भय शोकादि वर्जितः ॥

श्री गङ्गा वन्दना

विष्णु पादाब्ज सम्भूते गङ्गे त्रिपथ गामिनी ।
धर्म द्रवेति विख्याता पापं मे हर जाह्नवी ॥
गाङ्ग वारि मनोहारि मुरारि चरणच्युतम् ।
त्रिपुरारि शिरश्चारि पापहारि पुनातु माम् ॥

श्री काशी वन्दना

काश्यां हि काशते काशी काशी सर्व प्रकाशिका ।
सा काशी विदितायेन तेन प्राप्ताहि काशिका ॥
विश्वेशं माधवं दुर्दि दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानी मणिकर्णिकाम् ॥

श्री प्रयाग वन्दना

सितासिते यत्र तरङ्ग चामरे
नद्यौ विभाते मुनि भानु कन्यके ।
लीलातपत्रं वट एव साक्षात्-
सतीर्थ राजो जयति प्रयागः ॥

मोक्षदायिका पुरी

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका ।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्ष दायिका ॥

गौ वन्दना

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम् ।
त्वं तीर्थं सर्वतीर्थाणां नमस्तेऽस्तु सदानधे ॥
या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या देवेषु व्यवस्थिता ।
धेनु रूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥

जन्मभूमि महिमा

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते ।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥

भारत भूमि वन्दना

गायन्ति देवाः किलगीतकानि
धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे ।
स्वर्गा पवर्गास्पद मार्गभूते
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥



पवित्र होने का मंत्र

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा ।
यः स्मरेत्पण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

आसन शुद्धि मंत्र

ॐ पृथ्वि त्वयाधृता लोका देवित्वं विष्णुनाधृता ।
त्वञ्चधारय माँ देवी पवित्रं कुरु चासनम् ॥

चन्दन धारण मंत्र

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पाप नाशनम् ।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा ॥

यज्ञोपवीत धारण मंत्र

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रति मुञ्च शुभं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः ॥

जीर्ण यज्ञोपवीत त्यागन मंत्र

एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया ।
जीर्णत्वा त्व परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम् ॥

सूर्य को अर्घ्य देने का मंत्र

एहि सूर्य सहस्रांशो! तेजो राशे! जगत्पते ।
अनुकम्पय माँ भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकरं ॥

चन्द्रमा को अर्घ्य देने का मंत्र

क्षीरोदार्णव सम्भूत अत्रिगोत्र समुद्भव ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं गणेश प्रतिरूपक ॥

माला-प्रार्थना

अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीदमम सिद्ध्यये ॥

श्री तुलसी वन्दना

तुलसी सर्वभूतानां महापातक नाशिनी ।
अपवर्ग प्रदे देवि वैष्णवानां प्रिया सदा ॥

तुलसी तोड़ने का मंत्र

तुलस्यमृत नामासि सदा त्वं केशव प्रिया ।
केशवार्थं चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने ॥

तुलसी स्नान मंत्र

गोविन्द वल्लभां देवीं भक्त चैतन्य कारिणीम् ।
स्नापयामि जगद्धात्री विष्णु भक्ति प्रदायिनीम् ॥

तुलसी चढ़ाने का मंत्र

तुलसी हेम रूपां च रत्न रूपाञ्च मञ्जरीम् ।
भव मोक्ष प्रदां तुभ्यमर्पयामि हरि प्रियाम् ॥

विल्वपत्र चढ़ाने का मंत्र

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम् ।
त्रिजन्म पाप संहारं विल्व पत्रं शिवार्पणम् ॥

पीपल स्तुति

मूलता ब्रह्म रूपाय मध्यतो विष्णु रूपिणे ।
अग्रतः शिव रूपाय वृक्षराजायते नमः ॥
अश्वत्थहुत भुग्वास गोविन्दस्यं सदा प्रिय ।
अशेषं हर मे पापं वृक्ष राज नमोऽस्तुते ॥

दीपावली दीप स्तुति

भो दीपत्वं ब्रह्म रूप अन्धकार निवारक ।
इमां मया कृतां पूजां गृहणैस्तेजःप्रवर्धय ॥

सायं दीप स्तुति

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः ।
 दीपो हरतु मे पापं सन्ध्यादीप नमोऽस्तुते ॥
 शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुख सम्पदाम् ।
 मम बुद्धि प्रकाशञ्च दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥

प्रदक्षिणा मंत्र

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ।
 तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥

चरणामृत ग्रहण मंत्र

अकाल मृत्यु हरणं सर्व व्याधि विनाशनम् ।
 विष्णु पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

पञ्चामृत ग्रहण मंत्र

दुःख दौर्भाग्य नाशाय सर्वपाप क्षयाय च ।
 विष्णोः पञ्चामृतं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

क्षमा-प्रार्थना

यदक्षर-पद श्रष्टं मात्रा हीनं च यद्भवेत् ।
 तत्सर्वं क्षम्यतां देव ! प्रसीद परमेश्वर ॥
 मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
 यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
 आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
 पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥
 अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
 तस्मात् कारुण्य-भावेन रक्ष मां परमेश्वर ॥

Digitized by eGangotri Foundation, Chennai and Gangotri
ॐ त्वमेव माता च पिता त्वमेव
ॐ त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
ॐ त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
ॐ त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥
पूर्णता के लिए प्रार्थना

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णो सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥
यस्य स्मृता च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ॥

सर्वस्व निवेदनम्
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वानुसृत स्वभावात् ।
करोति यद् यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयेत्तत् ॥

ॐ

देव विसर्जन मंत्र
यान्तु देव गणा सर्वे पूजामावाय मामकीम ।
इष्ट काम समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥

श्री सद्गुरु वन्दना

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्
 वृन्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
 एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं ।
 भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं
 ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् ।
 योगीन्द्रमीड्यं भवबोध वैद्यं
 श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
 चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
 तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

संसारवृक्षमारूढाः पतन्ति नरकाण्ये ।
 येनोद्धृतमिदं विश्वं तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

गुरुर्ब्रह्मा उगुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
 गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥



नव-ग्रह-स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
 तमोऽरि सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरं ॥
 दधि शङ्ख तुषाराभं क्षीरोदारवसम्भवम् ।
 नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥
 धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम् ।
 कुमार शक्ति हस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥
 प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
 सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥
 देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम् ।
 बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥
 हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
 सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥
 नीलाञ्जन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
 छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥
 अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
 सिंहिकागर्भ सम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥
 पलाशपुष्प संकाशं तारकाग्रह मस्तकम् ॥
 रौद्र रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥
 इति व्यास मुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः ।
 दिवा वा यदि वा रात्री विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥
 नरनारीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्न नाशनम् ।
 ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥
 ग्रह नक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्नि समुद्भवाः ।
 ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासे ब्रूते न संशयः ॥

श्रीहनुमान चालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज
निज मन मुकुरु सुधारि ।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु
जो दायक फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौँ पवन-कुमार ।
बल बुधि बिद्या देहु मोहि
हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तihूँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा ।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन वरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
संकर सुवन केसरी नंदन ।
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥

विद्यावान् गुनी अति चातुर ।
 राम काज करिबे को आतुर ॥
 प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
 राम लखन सीता मन बसिया ॥
 सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा ।
 बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
 भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
 रामचंद्र के काज सँवारे ॥
 लाय सजीवन लखन जियाये ।
 श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
 रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
 तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
 सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
 अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
 सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
 नारद सारद सहित अहीसा ॥
 जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
 कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
 तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा ।
 राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
 तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।
 लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥

जुग सहस्र जोजन पर भानू।
 लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥
 प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
 जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥
 दुर्गम काज जगत के जेते।
 सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
 राम दुआरे तुम रखवारे।
 होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
 सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
 तुम रच्छक काहू को डरना॥
 आपन तेज सम्हारो आपै।
 तीनों लोक हाँक तें काँपै॥
 भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
 महाबीर जब नाम सुनावै॥
 नासै रोग हरै सब पीरा।
 जपत निरंतर हनुमत बीरा॥
 संकट तें हनुमान छुड़ावै।
 मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥
 सब पर राम तपस्वी राजा।
 तिन के काज सकल तुम साजा॥
 और मनोरथ जो कोइ लावै।
 सोइ अभित जीवन फल पावै॥
 चारों जुग परताप तुम्हारा।

है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
 साधु संत के तुम रखवारे ।
 असुर निकंदन राम दुलारे ॥
 अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
 अस बर दीन जानकी माता ॥
 राम रसायन तुम्हरे पासा ।
 सदा रहो रघुपति के दासा ॥
 तुम्हरे भजन राम को भावै ।
 जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
 अंत काल रघुबर पुर जाई ।
 जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
 और देवता चित्त न धरई ।
 हनुमत सेइ सब सुख करई ॥
 संकट कटै मिटै सब पीरा ।
 जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
 जै जै जै हनुमान गोसाई ।
 कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥
 जो सत बार पाठ कर कोई ।
 छुटहि बंदि महा सुख होई ॥
 जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा ।
 होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
 तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
 कीजै नाथ हृदय में डेरा ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन,
मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित;
हृदय बसहु सुर भूप ॥

ॐ

हनुमानञ्जनी सूनुर्यायु पत्रो महाबलः ।
रामेष्टः फाल्गुन सखः पिङ्गाक्षोऽमित विक्रमः ॥
उदधि क्रमणश्चैव सीताशोक विनाशनः ।
लक्ष्मण प्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा ॥
एवं द्वादश नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः ।
स्वापकाले प्रबोधे च यात्रा काले च यः पठेत् ॥
तस्य सर्वभयं नास्ति रणे च विजयी भवेत् ।
राजद्वारे गृह्वरे च भयं नास्ति कदाचन ॥
(आनन्द रामायण)

ॐ

यत्पाद पद्म युगलं तुलसी दलाद्यैः
सम्पूज्य विष्णु पदवी मतुलां प्रयान्ति ।
तनैव किं पुनरसौ परिरब्धमूर्ति
रामेण वायु तनयः कृत पुण्य पुञ्जः ॥

ॐ

संकटमोचन हनुमानाष्टक

मत्तगयन्द छन्द

बाल समय रबि भक्षि लियो तब
तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को
यह संकट काहु सों जात न टारो ॥
देवन आनि करी बिनती तब
छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो ।
को नहि जानत है जगमें कपि
संकटमोचन नाम तिहारो ॥ १ ॥
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि
जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब
चाहिय कौन बिचार बिचारो ॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु
सो तुम दास के सोक निवारो । को०-२ ॥
अंगद के सँग लेन गये सिय
खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु
बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ॥
हेरि थके तट सिधु सबै तब लाय
सिया-सुधि प्राण उबारो । को०-३ ॥

रावन त्रास दई सिय को सब
 राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
 ताहि समय हनुमान महाप्रभु
 जाय महा रजनीचर मारो ॥
 चाहत सीय असोक सों आगि सु
 दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो । को०-४ ॥
 बान लग्यो उर लछिमन के तब
 प्राण तजे सुत रावन मारो ।
 लै गृह बैद्य सुषेन समेत
 तबै गिरि द्रोण सु बीर उपायो ॥
 आनि सजीवन हाथ दई तब
 लछिमन के तुम प्राण उबारो । को०-५ ॥
 रावन जुद्ध अजान कियो तब
 नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
 श्रीरघुनाथ समेत सबै दल
 मोह भयो यह संकट भारो ॥
 आनि खगेस तबै हनुमान जु
 बंधन काटि सुत्रास निवारो । को०-६ ॥
 बंधु समेत जबै अहिरावन
 लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
 देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि
 देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ॥

जाय सहाय भयो तब ही
 अहिरावन सैन्य समेत सँहारो । को०-७ ॥
 काज किये बड़ देवन के तुम
 बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
 कौन सो संकट मोर गरीब को
 जो तुमसों नहि जात है टारो ॥
 बेगि हरो हनुमान महाप्रभु
 जो कुछ संकट होय हमारो ॥ को०-८ ॥

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर ।
 बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ॥

ॐ

श्रीहनुमानजी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की । वृष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥ टेक ॥
 जाके बल से गिरिवर काँपे । रोग-दोष जाके निकट न आँपे ॥ १ ॥
 अंजनि पुत्र महा बलदाई । संतन के प्रभु सदा सहाई ॥ २ ॥
 दे बीरा रघुनाथ पठाये । लंका जारि सीय सुधि लाये ॥ ३ ॥
 लंका सो कोट समुद्र सी खाई । जात पवनसुत वार न लाई ॥ ४ ॥
 लंका जारि असुर संहारे । सियारामजीके कौज सँवारे ॥ ५ ॥
 लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे । आनि संजीवन प्राण उवारे ॥ ६ ॥
 पैठी पताल तोरि जम-कारे । अहिरावन की भुजा उखारे ॥ ७ ॥
 बायें भुजा असुर दल मारे । दहिने भुजा संतजन तारे ॥ ८ ॥
 सुर नर मुनि आरती उतारे । जै जै जै हनुमान उचारे ॥ ९ ॥
 कंचन थार कपूर लौ छाई । आरति करत अंजना माई ॥ १० ॥
 जो हनुमान(जी) की आरति गावे । बसि वैकुंठ परमपद पावे ॥ ११ ॥

ॐ

श्री अन्नपूर्णास्तोत्रम्

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्य रत्नाकरी
 निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।
 प्रालेयाचल वंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥१॥
 नानारत्न विचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
 मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्वक्षोज कुम्भान्तरी ।
 काश्मीरागुरु वासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥२॥
 योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थ निष्ठकरी
 चन्द्रार्कानल भासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
 सर्वेश्वर्य समस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥३॥
 कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी
 कौमारी निगमार्थ गोचरकरी ओङ्कार बीजाक्षरी ।
 मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥४॥
 दृश्यादृश्यप्रभूतवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
 लीला नाटक सूत्रभेदन करी विज्ञानदीपाङ्कुरी ।
 श्री विश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥५॥
 उर्वी सर्व जनेश्वरी भगवती मातान्नपूर्णेश्वरी
 वेणी नीलसमानकुन्तलहरी नित्यानन्दानेश्वरी ।
 सर्वानन्दकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥६॥
 आदिक्रान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
 काश्मीरा त्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुराश्वरी ।

कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥७॥
 देवीसर्वविचित्ररत्न रचिता दाक्षायणी सुन्दरी
 वामास्यादु पयोधरप्रियकरी सौभाग्य माहेश्वरी ।
 भक्ताभीष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥८॥
 चन्द्रार्कानल कोटि कोटि सदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी
 चन्द्रार्कग्निसमान कुन्तलहरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।
 मालापुस्तक पाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥९॥
 क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकरी माता कृपा सागरी
 साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी ।
 दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥१०॥
 अन्नपूर्णे सदा पूर्णे शङ्कर प्राण वल्लभे
 ज्ञान वैराग्य सिद्ध्यर्थ भिक्षां देहि च पार्वति ।
 माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः
 बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥११॥

श्री संकटाजी की स्तुति

सदावृन्दारकोदवृन्दा-ससन्द-सन्दोहदायकम् ।
 अमन्दमङ्गलागारं वन्दे शङ्करनन्दनम् ॥ १ ॥
 किं कार्यं कठिनंकुतः परिभवः कुत्रापवादाद् भयम्
 किं मित्रं न हि किन्तु राजसदनं गम्यं न विद्या च का ।
 किं वाऽन्यज्जगतीतले प्रवद यत्तेषामसम्भावितम्
 येषां हृत्कमले सदा वसति सा तोषप्रदा सङ्कटा ॥ २ ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते
 गिरिवरविन्ध्य-शिरोधिनिवासिनिविष्णुविलासिनिजिष्णुनुते
 भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बनि भूरिकुटुम्बनि भूतिकृते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १ ॥
 सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
 त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते ।
 दनुजनिरोषिणि दुर्मदशोषिणि दुर्मुनिरोषिणि सिन्धुसुते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ २ ॥
 अयि जगदम्ब कदम्ब-वनप्रियवासिनि तोषिणि हासरते
 शिखरि-शिरोमणि-तुङ्ग-हिमालय-शृङ्गनिजालयमध्यगते ।
 मधुमधुरे मधुकैटभगञ्जिनि महिषविदारिणि रासरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ३ ॥
 अयि निजहंकृति-मात्रनिराकृत-धूम्रविलोचन-धूम्रशते
 समरविशोषित-रोषितशोणित-बीजसमुद्भव-बीजलते ।
 शिव-शिव-शुम्भ-निशुम्भ-महाहव-तर्पित-भूतपिशाचरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ४ ॥
 अयि शतखण्ड-विखण्डित-रुण्डवितुण्डित-शृण्डगजाधिपते
 निजभुज-दण्डनिपातित-चण्डविपाटित-मुण्डभटाधिपते ।
 रिपुगजगण्ड-विदारण-चण्डपराक्रम-शौण्डमृगाधिपते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ५ ॥

धनुरनुषङ्ग-रणक्षणसङ्ग-परिस्फुरदङ्ग-नटत्कटके
 कनकपिशङ्ग-पृषत्कनिषङ्ग-रसदभटशृङ्ग-हताबटुके ।
 हतचतुरङ्गबल-क्षितिरङ्गघटद्-बहुरङ्गरटद्-बटुके
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ६ ॥
 अयि रणदुर्मद-शत्रुवधाद्धुर-दुर्धर-निर्भर-शक्तिभृते
 चतुरविचारधुरीण - महाशयदूतकृत - प्रमथाधिपते ।
 दुरित-दुरीह-दुराशय-दुर्मति-दानवदूत-दुरन्तगते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ७ ॥
 अयि शरणागत-वैरिवधूजन-वीरवराभयदायिकरे
 त्रिभुवनमस्तक-शूलविरोधि-शिरोधिक्तामल-शूलकरे ।
 दुमिदुमितामर-दुन्दुभिनाद-मुहुर्मुखरीकृत-दिङ्निकरे
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ८ ॥
 सुरललना-ततथेयित-थेयित-थाभिनयोत्तर-नृत्यरते
 कृतकुक्कुथा-कुक्कुथोदि-डदाडिक - तालकुतूहल - गानरते ।
 धुधुकुट-धूधुट-धिन्धिधमितध्वनि-धीरमृदङ्ग-निनादरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ९ ॥
 जय जय जाप्यजये जयशब्द-परस्तुतितत्पर-विश्वनुते
 झण-झण-झिझिम-झिकृत-नूपुरशिञ्जित-मोहित-भूतपते ।
 नटितनटार्ध-नटीनटनायक-नाटननाटित-नाटचरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १० ॥
 अयि सुमनः-सुमनः-सुमनः-सुमनः-सुमनोरमकान्तियुते
 श्रितरजनी-रजनी रजनी-रजनी-रजनीकर-वक्त्रभृते ।
 सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराभिदृते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ११ ॥
 महित-महाहव-मल्लमतल्लिक-वल्लित-रल्लित-भल्लिरते
 विरचित-वल्लिकपालिक-पल्लिक-झिल्लिक-भिल्लिकवर्गवृते ।
 श्रुतकृत-फुल्ल-समुल्लसितारुण - तल्लजपल्लव-सल्ललिते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १२ ॥

अयि सुदतीजन - लालसमानस - मोहन-मन्मथराजसुते
 अविरल-गण्डगलन्-मदमेदुर - मत्त-मतङ्गराजगते ।
 त्रिभुवन - भूषणभूत - कलानिधिरूप-पयोनिधिराजसुते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १३ ॥
 कमलदलामल-कोमलकान्ति-कलाकलितामल - भालतले
 सकल - विलासकलानिलय - क्रमकेलि-चलत्कल-हंसकुले ।
 अलिकुल-सङ्कुल-कुन्तलमण्डल मौलिमिमद-बकुलालिकुले
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १४ ॥
 करमुरलीरव वर्जित-कूजित-लज्जित-कोकिलमञ्जुमते
 मिलितमिलिन्द-मनोहरगुञ्जित-रञ्जित-शैलनिकुञ्जगते ।
 निजगण - भूतमहाशबरीगण - रङ्गणसम्भृत - केलिरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १५ ॥
 कटितटपीत-दुकूलविचित्र-मयूखतिरस्कृत-चण्डरुचे
 जितकनकाचल-मौलिमदोर्जित-गर्जित-कुञ्जरकुम्भकुचे ।
 प्रणतसुरासुर-मौलिमणि-स्फुरदंशुलसन्नखचन्द्ररुचे
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १६ ॥
 विजित - सहस्रकरैक - सहस्रकरैक - सहस्रकरैकनुते
 कृतसुरतारक-सङ्गरतारक - सङ्गरतारक - सूननुते ।
 सुरथ-समाधि-समानसमाधि-समानसमाधि सुजाप्यरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १७ ॥
 पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
 अयि कमले कमलानिलयेकमलानिलयः स कथं न भवेत् ।
 तव पदमेव परं पदमस्त्विति शील्यतो मम किं न शिवे
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १८ ॥
 कनकलसत्-कलशीकजलैरनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवम्
 भजति स किं न शचीकुचकुम्भ-नटीपरिरम्भ-सुखानुभवम् ।
 तव चरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवम्
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १९ ॥

तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्ननुकूलयते
 किमु पुरुहूतपुरीन्दुमुखीसुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते ।
 मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ २० ॥
 अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
 अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे ।
 यदुचितमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भवि देवि दयां कुरु मे
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ २१ ॥
 स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना
 नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत् ।
 परमया रमया स निषेव्यते
 परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत् ॥ २२ ॥
 ॥ श्री सङ्कष्टनाशिन्यै समर्पितमस्तु ॥



देव्यपराध क्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
 न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
 न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
 परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥ १ ॥
 विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
 विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
 तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
 कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ २ ॥
 पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
 परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
 मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
 कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥
 जगन्मातर्मास्तव चरणसेवा न रचिता
 न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
 तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
 कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ४ ॥
 परित्यक्ता देवा विविधविध सेवाकुलतया
 मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
 इदानींचेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
 निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥ ५ ॥
 श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
 निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
 तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
 जनः को जानीते जननि जननीयं जपविधौ ॥ ६ ॥
 चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो

जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।
 कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
 भवानी त्वत्पाणि ग्रहणपरिपाटी फलमिदम् ॥७॥
 न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभव वाञ्छापि च न मे
 न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
 अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
 मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥८॥
 नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
 किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
 श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
 धत्से कृपा मुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥
 आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
 करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
 नैतच्छठत्वं मम भाव येथाः
 क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥
 जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णाकरुणास्ति चेन्मयि ।
 अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥
 मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
 एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥

सप्तश्लोकी दुर्गा

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
 बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ (१-५५-५६)
 दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः
 स्वस्थैः स्मृता मतिमतीवं शुभां ददासि ।
 दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या
 सर्वोपकार करणाय सदाद्रिचिन्ता ॥ (४-१७)
 सर्वमङ्गल मङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
 शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ (११-१०)
 शरणागतदीनार्त परित्राण परायणे ।
 सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ (११-१२)
 सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते ।
 भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥ (११-२४)
 रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा,
 तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
 त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां,
 त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ (११-२९)
 सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्या खिलेश्वरि ।
 एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ॥ (११-३९)
 (श्री दुर्गासप्तशती से)

ॐ

प्रभाते यः स्मरेन्नित्यं दुर्गा दुर्गाक्षर द्वयम् ।
 आपदस्तस्य न श्यन्ति तमः सूर्योदये यथा ॥

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे
 नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे ।
 नमस्ते जगद्वन्द्य पादार विन्दे
 नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥

ॐ

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी ।
 नमो नमो अम्बे दुःख हरनी ॥
 निरंकार है ज्योति तुम्हारी ।
 तिहूँ लोक फैली उजियारी ॥
 शशि लिलार मुख महा विशाला ।
 नेत्र लाल भृकुटी बिकराला ॥
 रूप मातु को अधिक सुहावै ।
 दरश करत जन अति सुख पावै ॥
 तुमहीं सार शक्तिलय कीना ।
 पालन हेतु अन्न धन दीना ॥
 अन्नपूर्णा होई जगपाला ।
 तुमहीं आदि सुन्दरी बाला ॥
 प्रलय काल सब नाशन हारी ।
 तुम गौरी शिव-शंकर प्यारी ॥
 शिव योगी तुम्हरे गुण गावैं ।
 ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावैं ॥
 रूप सरस्वती को तुम धारा ।
 दे सुबुद्धि ऋषि-मुनिन उबारा ॥
 धर्यो रूप नरसिंह को अम्बा ।
 प्रगट भई फाड़ के खम्भा ॥
 रक्षा करि प्रह्लाद बचायो ।
 हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो ॥

लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं।
 श्री नारायण अङ्ग समाहीं॥
 क्षीर सिन्धु में करत बिलासा।
 दया सिन्धु दीजै मन आशा॥
 हिगलाज में तुम्हीं भवानी।
 महिमा अमित न जात बखानी॥
 मातंगी धूमावति माता।
 भुवनेश्वरि बगला सुखदाता॥
 श्री भैरव तारा जगतारिणि।
 छिन्न भाल भव दुःख निवारिणि॥
 केहरि वाहन सोह भवानी।
 लंगुर वीर चलत अगवानी॥
 कर में खप्पर खड्ग बिराजै।
 जाको देखि काल डर भाजै॥
 सोहै अस्त्र और त्रिशूला।
 जाते उठत शत्रु हिय शूला॥
 नागकोटि में तुम्हीं विराजत।
 तिहूँ लोक में डंका बाजत॥
 शुम्भ-निशुम्भ दानव तुम मारे।
 रक्तबीज शंखन संहारे॥
 महिषासुर नृप अति अभिमानी।
 जेहि अघ भार मही अकुलानी॥
 रूप कराल कालि को धारा।
 सेन सहित तम तिहि संहारा॥

परी गाढ़ सन्तन पर जब-जब ।
 भई सहाय मातु तुम तब-तब ॥
 अमरपुरी औरो सब लोका ।
 तव महिमा सब रहे अशोका ॥
 बाला में है ज्योति तुम्हारी ।
 तुम्हें सदा पूजै नर-नारी ॥
 प्रेम भक्ति से जो यश गावै ।
 दुःख दारिद्र्य निकट नहि आवै ॥
 ध्यावै तुम्हें जो नर मन लाई ।
 जन्म मरण ताकर छुटि जाई ॥
 योगी सुर मुनि कहत पुकारी ।
 योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी ॥
 शंकर ने अचरज तप कीनो ।
 काम क्रोध जीति सब लीनो ॥
 निशि दिन ध्यान धरौ शंकर को ।
 काहु काल नहि सुमिरो तुमको ॥
 शक्ति रूप को मरम न पायो ।
 शक्ति गई तब मन पछतायो ॥
 शरणागत होइ कीर्ति बखानी ।
 जय-जय-जय जगदम्ब भवानी ॥
 भई प्रसन्न आदि जगदम्बा ।
 दई शक्ति नहि कीन्ह विलम्बा ॥
 मोको मातु कष्ट अति घेरो ।
 तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो ॥

आशा तृष्णा निपट सतावै ।
 रिपु मूरख मोहि अति डरपावै ॥
 शत्रु नाश कीजै महरानी ।
 सुमिरौं इक चित तुम्हें भवानी ॥
 करौ कृपा हे मातु दयाला ॥
 ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला ॥
 जब लगि जियों दया फल पाऊँ ।
 तुम्हरो जस मैं सदा सुनाऊँ ॥
 दुर्गा चालीसा जो नर गावै ।
 सब सुख भोग परम पद पावै ॥
 देवी दास शरण निज जानी ।
 करहु कृपा जगदम्ब भवानी ॥



सप्तश्लोकी दुर्गा

पद्यानुवाद

ज्ञानीजनों के चित्त भी आकृष्ट बलपूर्वक करें ।
 फिर मोह से वे भगवती देवी महामाया भरें ॥१॥ (१-५५-५६)
 दुर्गे, स्मरण से प्राणियों के भय अमित करती हरण,
 मतिदान करती अति शुभा यदि स्वस्थ जन करते स्मरण ।
 हे दुःख-भय दारिद्र्य हारिणि, कौन तुम-सा अन्य है,
 सर्वोपकारक चित्त जिसका यों दया-पर्जन्य है ॥२॥ (४-१७)
 हे सर्वमङ्गल मङ्गले, सर्वार्थसिद्धि शिवे ततः ।
 गौरी शरण्ये त्र्यम्बके, नारायणी तुमको नमः ॥३॥ (११-१०)
 दीनार्त शरणा गत जनों की तुम परित्राता अतः ।
 सर्वार्तिहारिणि देवि हे, नारायणी तुमको नमः ॥४॥ (११-१२)
 सर्वेश्वरी सर्वस्वरूपे सर्वशक्ति-समन्विते ।
 भय से बचाओ देवि, दुर्गे देवि हमसे बन्दिते ॥५॥ (११-२४)
 करती विनष्ट अशेष रोगों को, हुई यदि तुष्ट तुम,
 त्यों नष्ट सारे इष्ट कामों को, हुई यदि रुष्ट तुम ।
 जो नर हुए आश्रित तुम्हारे वे विपन्न न हों कभी,
 प्रत्युत् बनें अन्यान्य के आश्रय-प्रदाता वे सभी ॥६॥ (११-२९)
 अखिलेश्वरी, त्रैलोक्यकी यों सर्व बाधाएँ शमन-
 करती रहो एवं हमारे वैरियों को तुम दलन ॥७॥ (११-३९)
 ('अशोक' अवस्थी)

ॐ

दुर्गात् त्रायति भक्तं या सदा दुर्गति नाशिनी ।
 दर्जेया सर्व देवानां तां दुर्गां पूजयाम्यहम् ॥

(दे० भा० ३-२६-६०)

ॐ

श्री दुर्गा वन्दना (आरती)

जगजननी जय! जय!! मा! जग जननी जय! जय!!
 भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय जय॥ टेक॥
 तू ही सत-चित्त-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
 सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूषा॥ १॥ जग०
 आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
 अमल अनन्त अगोचर अज आनंद राशी॥ २॥ जग०
 अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी।
 कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर संहार करी॥ ३॥ जग०
 तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया।
 मूल प्रकृति, विद्या तू, तू जननी, जाया॥ ४॥ जग०
 राम, कृष्ण तू, सीता, व्रजरानी राधा।
 तू वाञ्छ कल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा॥ ५॥ जग०
 दश विद्या, नव दुर्गा, नाना शस्त्र करा।
 अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव-रूप-धरा॥ ६॥ जग०
 तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू।
 तू ही श्मशान विहारिणि ताण्डव-लासिनि तू॥ ७॥ जग०
 सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाधारा।
 विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा॥ ८॥ जग०
 तू ही स्नेह-सुधामयि, तू अति गरलमना।
 रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना॥ ९॥ जग०
 मूलाधार निवासिनि, इह-पर-सिद्धि प्रदे।
 कालातीता काली, कमला तू वरदे॥ १०॥ जग०
 शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी।
 भेद प्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी॥ ११॥ जग०
 हम अति दीन दुखी माँ! विपत-जाल घेरे।
 हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे॥ १२॥ जग०
 निज स्वभाववश जननी! दया दृष्टि कीजै।
 करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण, दीजै॥ १३॥ जग०



श्री विश्वनाथाष्टकम्

गङ्गा तरङ्ग रमणीय जटाकलापं
 गौरीनिरन्तर विभूषित वामभागम् ।
 नारायण प्रियमनङ्गमदापहारं
 वाराणसी पुरपति भज विश्वनाथम् ॥ १ ॥
 वाचामगोचर मनेक गुण स्वरूपं
 वागीशविष्णु सुर सेवित पाद पीठम् ।
 वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तम्
 वाराणसी पुरपति भज विश्वनाथम् ॥ २ ॥
 भूताधिपं भुजगभूषणभूषिताङ्गं
 व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम् ।
 पाशाङ्कुशाभयवर प्रदशूल पाणिम्
 वाराणसी पुरपति भज विश्वनाथम् ॥ ३ ॥
 शीतांशुशोभित किरीट विराजमानं
 भालेक्षणानलविशोषितपञ्चबाणम् ।
 नागाधिपारचितभासुर कर्णपूरम्
 वाराणसी पुरपति भज विश्वनाथम् ॥ ४ ॥
 पञ्चाननं दुरितमत्तमतङ्ग जानां
 नागान्तकं दनुज पुङ्गव पन्नगानाम् ।
 दावानलं मरणशोकजराटवीनाम्
 वाराणसी पुरपति भज विश्वनाथम् ॥ ५ ॥
 तेजोमयं सगुण निर्गुणमद्वितीय-
 मानन्द कन्दमपराजितमप्रमेयम् ।
 नागात्मकं सकल निष्फल मात्मरूपं
 वाराणसी पुरपति भज विश्वनाथम् ॥ ६ ॥

आशांविहाय परिहृत्य परस्य निन्दां
 पापे रतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ ।
 आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशम्
 वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥७॥
 रागादिदोषरहितं स्वजनानुरागं
 वैराग्य शान्तिं निलयं गिरिजा सहायम् ।
 माधुर्यं धैर्यं सुभगं गरलाभिरामम्
 वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥८॥
 वाराणसीपुरपते स्तवनं शिवस्य
 व्याख्यातमष्टकं मिदं पठते मनुष्यः ।
 विद्या श्रियं विपुलसौख्यं मनन्त कीर्तिं
 सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥९॥
 विश्वनाथाष्टकमिदं यः पठेच्छिव सन्निधौ ।
 शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥१०॥



ते जन्म भाजः खलु जीव लोके
 येषां मनोध्यायति विश्वनाथम् ।
 वाणी गुणान्स्तौति कथां शृणोति
 श्रोत्रद्वयं ते भव मुत्तरन्ति ॥

(स्क० ब्राह्म० २३-१३५)



श्री रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाण रूपं
 विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ।
 निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
 चिदाकाशमाकाश वासं भजेऽहम् ॥ १ ॥
 निराकारमोंकार मूलं तुरीयं
 गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम् ।
 करालं महाकाल कालं कृपालं
 गुणागार संसार पारं न तोऽहम् ॥ २ ॥
 तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं
 मनोभूत कोटिप्रभा श्रीशरीरम् ।
 स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारु गङ्गा
 लसद्भाल बालेन्दु कण्ठे भुजंगा ॥ ३ ॥
 चलत् कुण्डलं भू सुनेत्रं विशालं
 प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालुम् ।
 मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं
 प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि ॥ ४ ॥
 प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं
 अखण्डं अजं भानुकोटि प्रकाशम् ।
 त्रयःशूलनिर्मूलनं शूलपाणि
 भजेऽहं भवानीपति भावगम्यम् ॥ ५ ॥
 कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी
 सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
 चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी
 प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारिः ॥ ६ ॥

न यावद्दुमानाथ पादार विन्दं
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्ताप नाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥७॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजा
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यम् ।
जराजन्मदुःखौघ तातप्यमानं
प्रभो पाहि आपन्नमासीश शम्भो ॥८॥
रुद्राष्टक मिदं प्रोक्तं विप्रेण हर तोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भु प्रसीदति ॥९॥



असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुर तरुवर शाखा लेखनी पत्र मुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥

(शिवमहिमा.)



द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम् ।
 उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम् ॥१॥
 परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम् ।
 सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥२॥
 वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमी तटे ।
 हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये ॥३॥
 एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
 सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥४॥



श्री शिवपञ्चाक्षर स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
 नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै "न" काराय नमः शिवाय ॥१॥
 मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय, नन्दीश्वर प्रमथनाथमहेश्वराय ।
 मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय, तस्मै "म" काराय नमः शिवाय ॥२॥
 शिवाय गौरी वदनाब्जवृन्द, सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
 श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै "शि" काराय नमः शिवाय ॥३॥
 वसिष्ठकुम्भोद्भव गौतमार्य, मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
 चन्द्राकवैश्वानरलोचनाय, तस्मै "व" काराय नमः शिवाय ॥४॥
 यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
 दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै "य" काराय नमः शिवाय ॥५॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
 शिवलोकमवाप्नोति, शिवेन सह मोदते ॥



महा मृत्युञ्जय मंत्र

ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि
वर्द्धनम् । उर्वारसकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयं मामृतात् ।
भूर्भुवः स्वरो जूं सः हौं ॐ ॥

त्र्यक्षरी मंत्र

ॐ जूं सः

रक्षानिमित्त— 'ॐ जूं सः अमुकं पालय-पालय सः जूं ॐ ।'

रोगादिनिमित्त— 'ॐ जूं सः अमुकं (रोग) नाशय नाशय सः जूं ॐ ।'

समर्पण-प्रार्थना

ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥

मृत्युञ्जय महादेव त्राहिमां शरणागतम् ।
जन्म मृत्यु जरा रोगैः पीडितं कर्म बन्धनैः ॥



शिव स्तुति

छप्पय

जय जय जय जय जयति शंभु पशुपति मृडशंकर ।
 जय भूतेश गिरीश ईश शुचि शीश गंगधर ॥
 व्योमकेश शितिकंठ भीम भव भर्ग उग्र हर ।
 जै त्र्यंबक त्रिपुरारि मौलि शोभित सुइंद वर ॥
 जयति जटिल जय जयति जय नील कंठ श्री कंठ शिव ।
 तव पद पंकज भृंग इव 'शशिश शेखर' मकरंद पिव ॥

कवित्त

राजें रमनीय रत्न रचित सिंहासन पै,
 दंपति सुदर्प दमनीय छवि छजें हैं ।
 छजें बहु भूषण विभूषित अखिल अंग,
 सुभग दुकूल हेम रंग तन भाजें हैं ॥
 भाजें भल भाल त्रयलोचन ललित लाल,
 विधुकर बाल उरमान मणि साजें हैं ।
 साजें चहुँ ओर सुर सुन्दरी व्यजन वायु,
 बीच वक्र तुंड बर बदन विराजें हैं ॥

सवैया

अवलोकन को अरविन्द सो आनन क्यों अँखिया न अनेक भई ।
 करिबे को कथामृत पान सदा किन सुन्दर श्रोत भए न कई ।
 शुचि कीरति 'शंभु' बखानिबे को मति मंजुल भूरि भली न ठई ।
 गुण गाइबे को गिरजापति के कस कोटिन जीह दर्ई न दर्ई ॥

तुम दीनदयाल कृपालु सुनो विनती विसराइ कै दोषन जू।
 करनी नहि नेक बनी हमरी तेहिते बहु पावत शोकन जू।
 शरणागत के सुखदायक हौ निज ओरि करौ अवलोकन जू।
 'शशिशेखर' दास को दुःख बने अघ मोचन कीन्हे त्रिलोचन जू॥

दोहा

मनसा वाचा कर्मणा, बुद्धि प्राकृतिक जोय।
 किए कर्म सादर सर्बहि, शिवहि समर्पण सोय॥



शंभवे नमः

मुझे है सहारा तुम्हारा महादेव।
 तेरे बिन न कोई अधारा महादेव॥
 न तनका, न धनका, न जनका मुझे बल।
 नहीं बुद्धि विद्या विचारा महादेव॥
 तेरे नाम के ही भरोसे पड़ा बस।
 किसी भाँति करता गुजारा महादेव॥
 न मैं लोक परलोक का हो सकूँगा।
 जो तुमने किया हा किनारा महादेव॥
 बने काम बातों में ही 'चन्द्रशेखर'।
 दया दृष्टि कर जो निहारा महादेव॥
 (शैव प्रमोद से)



श्रीशिव चालीसा

दोहा—जै गणेश गिरिजासुवन,
मङ्गल मूल सुजान ।
कहत अयोध्यादास तव,
देव अभय बरदान ॥

चौपाई

जै गिरिजापति दीनदयाला ।
सदा करत संतन प्रतिपाला ॥
भाल चन्द्रमा सोहत नीके ।
कानन कुण्डल नागफनी के ॥
अङ्ग गौर शिव गङ्ग बहाये ।
मुण्डमाल तन छोर लगाये ॥
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहै ।
छबि को देखि नाग मुनि मोहै ॥
मैना मातु को हवें दुलारी ।
बाम अङ्ग सोहत छबि भारी ॥
कर त्रिशूल सोहत छबि न्यारी ।
करत सदा शत्रुन क्षयकारी ॥
नन्दी गण सोहत हैं कैसे ।
सागर मध्य कमल हैं जैसे ॥

कार्तिक श्याम और गणराज ।
 या छबि को कहि जात न काऊ ॥
 देवन जबहीं जाय पुकारा ।
 तबहि दुःख प्रभु आप निवारा ॥
 कियो उपद्रव तारक भारी ।
 देवन सब मिलि तुमहि जुहारी ॥
 तुरत षड़ानन आप पठायउ ।
 लवनिमेष महँ मारि गिरायउ ॥
 आप जलंधर असुर सँघारा ।
 सुयश तुम्हार विदित संसारा ॥
 त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई ।
 सबहि कृपा करि लीन बचाई ॥
 किया तपहि भागीरथ भारी ।
 पुरव प्रतिज्ञा तासु पुरारी ॥
 दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं ।
 सेवक अस्तुति करत सदाहीं ॥
 वेद नाम महिमा तव गाई ।
 अकथ अनादि भेद नहि पाई ॥
 प्रकटी उदधि मथन में ज्वाला ।
 जरत सुरासुर भये बिहाला ॥
 कीन्ह दया तहँ करी सहाई ।
 नीलकण्ठ तव नाम कहाई ॥

पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा ।
 जीत के लंक विभीषण दीन्हा ॥
 सहस कमल में हो रहे धारी ।
 कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ॥
 एक कमल प्रभु राखेउ जोई ।
 कमल नयन पूजन चह सोई ॥
 कठिन भक्ति देखा प्रभु शंकर ।
 भये प्रसन्न दिए इच्छित वर ॥
 जय जय जय अनन्त अविनासी ।
 करत कृपा सबके घट बासी ॥
 दुष्ट सकल नित मोहि सतावै ।
 भ्रमत रहे मोहिं चैन न आवै ॥
 त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारौं ।
 यहि अवसर मोहि आन उबारौ ॥
 लै त्रिशूल शत्रुन को मारो ।
 संकट से मोहिं आनि उबारो ॥
 मातु पिता भ्राता सब कोई ।
 संकट में पृष्ठत नहिं कोई ॥
 स्वामि एक है आस तुम्हारी ।
 आय हरहु अब संकट भारी ॥
 धन निरधन को देत सदाहीं ।
 जो कोइ जाँचय वो फल पाहीं ॥
 अस्तुति केहि बिधि करौं तुम्हारी ।

क्षमहु नाथ अब चूक हमारी ॥
 शंकर हो संकट के नाशन ।
 विघ्न विनाशन मंगल कारन ॥
 योगि यती मुनि ध्यान लगावैं ।
 शारद नारद शीश नवावैं ॥
 नमो नमो जै नमः शिवाये ।
 सुर ब्रह्मादिक पार न पाये ॥
 जो यह पाठ करै मन लाई ।
 तापर होत हैं शंभु सहाई ॥
 रिनिंया जो कोई हो अधिकारी ।
 पाठ करै सो पावन हारी ॥
 पुत्र होन को इच्छ जोई ।
 निश्चय शिव प्रसाद ते होई ॥
 पंडित त्रयोदशी को लावै ।
 ध्यानपूर्वक होम करावै ॥
 त्रयोदशी व्रत करै हमेशा ।
 तन नहिं ताके रहै कलेशा ॥
 शंकर सम्मुख पाठ सुनावै ।
 मन क्रम वचन जो ध्यान लगावै ॥
 जन्म जन्म के पाप नशावै ।
 अन्त बास शिवपुर में पावै ॥

Digitized by eGangotri
कहै अयोध्या आस तुम्हारी ।
जानि सकल दुख हरहु हमारी ॥

दोहा

नित नेमकरि प्रातहि,
पाठ करौ चालीस ।
तुम मेरी मनकामना,
पूर्ण करहुँ जगदीश ॥

ॐ

अथ शिवनामावलि

शिव शिवेति शिवेति शिवेति वा
हर हरेति हरेति हरेति वा ।
भव भवेति भवेति भवेति वा
मृड मृडेति मृडेति मृडेति वा ॥
॥ ॐ तत् सत् श्रीशिवार्पणमस्तु ॥

ॐ

आरती श्री शंङ्कर जी की

(ब्रह्मा, विष्णु, महेश की)

ॐ जय शिव ओंकारा, जय शिव ओंकारा ।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धङ्गी धारा ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥१॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजै ।

हंसानन गरुडासन वृषवाहन साजै ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥२॥

दो भुज चारु चतुर्भुज दस भुज ते सोहै ।

तीनों रूप निरखता त्रिभुवन-जन मोहै ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥३॥

अक्षमाला वनमाला रुण्डमालाधारी ।

चन्दन मृगमद सोहे भोले शशधारी ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥४॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे ।

सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥५॥

कर में श्रेष्ठ कमण्डलु चक्र त्रिशूलधरता ।

जगहर्ता जगकर्ता जगपालनकर्ता ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥६॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।

प्रणव अक्षर के मध्ये यह तीनों एका ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥७॥

त्रिगुण स्वामि की आरती जो कोई नर गावै ।

भनत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावै ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥८॥

श्री शंकर आरती

जय शंकर भोले शिव हर शंकर भोले,
 अखिलेश्वर प्रभु तुमको संतत श्रुति बोले,
 हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥१॥
 तुम सब सृष्टि बनाओ तुम पालो स्वामी, शिव तुम० ।
 छिन में पुनि बिनशाओ बिनु भ्रम वृषगामी,
 हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥२॥
 तुमरो आदि न अंता तुम गिरिजा कंता, शिव तुम० ।
 तुमरे ही गुण गावें सुर मुनि सब संता,
 हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥३॥
 तुम करुणागुण आगर भवसागर तारी, शिव तुम० ।
 नाम अखिल अघहारी सुकृत भरण भारी,
 हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥४॥
 निरंकार तुम देवा हौ पुनि साकारा, शिव हौ० ।
 भक्तजनों के कारण लेते अवतारा,
 हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥५॥
 कर्पूर द्युति गौरं निज जन मन चौरं, शिव निज० ।
 तड़ित प्रभा भल खौरं मञ्जु जटा मौरं,
 हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥६॥
 शुभ त्रय नेत्र विशालं शशियुत भल भालं, शिव शशि० ।
 शिर सुरसरि जल जालं जनु मालति मालं,
 हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥७॥
 मुख छबि बिधु अकलंकं कर रति पति रंकं, शिव कर० ।
 मातु उमा लहि अंकं राजति निःशंकं,
 हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥८॥
 फणिमणि भूषण धारं गजमुक्ता हारं, शिव गज० ।
 आनन हास्य मुदारं शोभा अवतारं,
 हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥९॥
 नित्य नवल वरं वासं कैलाशं वासं, शिव कैलाशं ।
 बहु रवि ज्योति प्रकाशं तम राशि नाशं,
 हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥१०॥

पद तल करुणा कंदं दश नख दश चन्द्रं, शिव दश० ।
 मेटन सब दुख द्वंदं काटन भव फंदं,
 हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥११॥
 ब्रह्मा आरतिधारी, विष्णु स्तुतिकारी, शिव विष्णु० ।
 किन्नर वाद्य प्रचारी
 नृत्य करत सुर नारी इन्द्र चमर द्वारी,
 हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥१२॥
 देव सुमन झर लावे 'शशिव शोखर' भावे, शिव शशिव० ।
 प्रमुदित प्रतिदिन गावे मनवाञ्छित पावे,
 हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥१३॥
 जय शंकर भोले शिव हर शंकर भोले,
 अखिलेश्वर प्रभु तुमको संतत श्रुति बोले,
 हर हर बं बं भोले, शिव हर बं बं भोले ॥१४॥
 (शैव प्रमोद से)



करिये सदा शंकर पद वन्दन । जासु कृपा छूटत भव बन्धन ॥
 परम दयालु-दया निधि देवा । करत सदा सुर-नर-मुनि सेवा ॥
 वेष अमंगल परम सुहावन । कलिमल-अघ-तम पुंजनसावन ॥
 याचात याहि 'भरत' कर जोरे । बसहु सदा शिव मानस मोरे ॥



श्रीराम वन्दना

छंद

नमामि भक्त वत्सलं । कृपालु शील कोमलं ॥
 भजामि ते पदांबुजं । अकामिनां स्वधामदं ॥
 निकाम श्याम सुंदरं । भवाम्बुनाथ मंदरं ॥
 प्रफुल्ल कंज लोचनं । मदादि दोष मोचनं ॥
 प्रलंब बाहु विक्रमं । प्रभोऽप्रमेय वैभवं ॥
 निषंग चाप सायकं । धरं त्रिलोक नायकं ॥
 दिनेश वंश मंडनं । महेश चाप खंडनं ॥
 मुनींद्र संत रंजनं । सुरारि वृंद भंजनं ॥
 मनोज वैरि वंदितं । अजादि देव सेवितं ॥
 विशुद्ध बोध विग्रहं । समस्त दूषणापहं ॥
 नमामि इंदिरा पतिं । सुखाकरं सतां गतिं ॥
 भजे सशक्ति सानुजं । शचीपति प्रियानुजं ॥
 त्वदंग्घ्रि मूल ये नरा । भजन्त हीन मत्सराः ॥
 पतन्ति नो भवार्णवे । वितर्क वीचि संकुले ॥
 विविक्त वासिनः सदा । भजन्ति मुक्तये मुदा ॥
 निरस्य इंद्रियादिकं । प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥
 त्वमेकमद्भुतं प्रभुं । निरीहमीश्वरं विभुं ॥
 जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरीयमेव केवलं ॥
 भजामि भाव बल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभं ॥
 स्वभक्त कल्प पादपं । समं सुसेव्यमन्वहं ॥
 अनप रूप भूपतिं । नतोऽहमुर्विजा पतिं ॥
 प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज भक्ति देहि मे ॥
 पठन्ति ये स्तवं इदं । नरादरेण ते पदं ॥
 व्रजन्ति नात्र संशयं । त्वदीय भक्ति संयुताः ॥

ॐ

श्रीराम चालीसा

श्री रघुबीर भक्त हितकारी ।
 सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी ॥
 निसिदिन ध्यान धरै जो कोई ।
 ता सम भक्त और नहि होई ॥
 ध्यान धरें शिवजी मन माहीं ।
 ब्रह्मा इन्द्र पार नहि पाहीं ॥
 जय जय जय रघुनाथ कृपाला ।
 सदा करो सन्तन प्रतिपाला ॥
 दूत तुम्हार वीर हनुमाना ।
 जासु प्रभाव तिहूँ पुर जाना ॥
 तुम भुज दंड प्रचंड कृपाला ।
 रावन मारि सुरन प्रतिपाला ॥
 तुम अनाथ के नाथ गुसाई ।
 दीनन के हो सदा सहाई ॥
 ब्रह्मादिक तुम पार न पावैं ।
 सदा ईश तुम्हरो यश गावैं ॥
 चारिउ वेद भरत हैं साखी ।
 हम भक्तन की लज्जा राखी ॥

गुण गावत शारद मन माहीं ।
 सुरपति ताको पार न पाहीं ॥
 नाम तुम्हार लेत जो कोई ।
 ता सम धन्य और नहि होई ॥
 राम नाम है अपरम्पारा ।
 चारहु वेदन जाहि पुकारा ॥
 गणपति नाम तुम्हारो लीन्हीं ।
 तिनको प्रथम पूज्य तुम कीन्हीं ॥
 शेष रटत नित नाम तुम्हारा ।
 महि को भार शीश पर धारा ॥
 फूल समान सहत सो भारा ।
 पावत कोउ न तुम्हारो पारा ॥
 भरत तुम्हार नाम उर धारो ।
 तासों कबहुँ न रण में हारो ॥
 नाम शत्रुहन हृदय प्रकाशा ।
 सुमिरत होत शत्रु कर नाशा ॥
 लखन तुम्हारे आज्ञाकारी ।
 सदा करत सन्तन रखवारी ॥
 ताते रण जीते नहि कोई ।
 यद्ध जु यमहुँ सो किन होई ॥
 महालक्ष्मी सो धरि अवतारा ।

सबविधि करत पाप को छरा ॥
 सीता नाम पुनीता गायो ।
 भुवनेश्वरी प्रभाव दिखायो ॥
 घट सो प्रकट भई सो आई ।
 जाको देखत चन्द्र लजाई ॥
 सो तुम्हरे नित पाँव पलोटत ।
 नवों निद्धि चरणन में लोटत ॥
 सिद्धि अठरह मंगलकारी ।
 सो तुम पर जावैं बलिहारी ॥
 औरहु जे अनेक प्रभुताई ।
 सो सीतापति तुमहि बनाई ॥
 इच्छ ते कोटिन संसारा ।
 रचत न लागत पलकी बारा ॥
 जो तुम्हरे चरणन चित लावै ।
 ताकी मुक्ति अवाशि हो जावै ॥
 जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरूपा ।
 निर्गुण ब्रह्म अखंड अनूपा ॥
 सत्य सत्य प्रभु त्रिभुवन स्वामी ।
 सत्य सनातन अन्तर्यामी ॥
 सत्य भजन तुम्हरो जो गावै ।
 सो निश्चय चारों फल पावै ॥

सत्य शपथ गौरीपति कीन्हीं ।
 तुमने भक्तहिं सब सिधि दीन्हीं ॥
 सुनहु नाथ तुम तात हमारे ।
 तुमहिं भरत कुल पूज्य प्रचारे ॥
 तुमहिं देव कुलदेव हमारे ।
 तुम गुरुदेव प्राण के प्यारे ॥
 जो कछु हो सो तुमहो राजा ।
 जय जय जय प्रभुराखो लाजा ॥
 राम आत्मा पोषण हारे ।
 जय जय जय दशरत्थ दुलारे ॥
 ज्ञान हृदय देउ ज्ञान स्वरूपा ।
 नमो नमो जय जगपति भूपा ॥
 धन्य धन्य तुम धन्य प्रतापा ।
 नाम तुम्हार हरत सन्तापा ॥
 सत्य शुद्ध देवन मुख गाया ।
 बजी दुन्दुभी शंख बजाया ॥
 सत्य सत्य तुम सत्य सनातन ।
 तुमही हो हमारे तन-मन-धन ॥
 याको पाठ करे जो कोई ।
 ज्ञान प्रकट ताके उर होई ॥

आवागमन मिटै तिहिं केरा ।
 सत्य वचन मानै शिव मेरा ॥
 और आस मनमें जो होई ।
 मन वांछित फल पावै सोई ॥
 तीनहुँ काल ध्यान जो लावै ।
 तुलसी दल अरु फूल चढ़ावै ॥
 साग पत्र जो भोग लगावै ।
 सो नर सकल सिद्धि पावै ॥
 अन्त समय रघुवर पुर जाई ।
 जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई ॥
 श्री रामलग्न कहै अरु गावै ।
 सो बैकुण्ठ धाम को पावै ॥

दोहा

सात दिवस जो नेम करि, पाठ करे चितलाय ।
 रामलग्न हरि कृपा से, अवशिष्ट मुक्ति को पाय ॥
 राम चालीसा जो पढ़े, रामचरण चितलाय ।
 जो इच्छा मन में करे, सकल सिद्धि हो जाय ॥



॥ श्री हरि शरणम् ॥

मानस विनय (चौपाई)

बालकाण्ड

मंगल भवन अमंगल हारी। ब्रह्म सो दशरथ अजिर बिहारी॥*
जौं अनाथ हित हम पर नेहू। तौ प्रसन्न होइ यह बर देहू॥*
देखहि हम सो रूप भरि लोचन। कृपा करहु प्रनतारित मोचन॥*
बार-बार मागउँ कर जोरें। मनु परिहरै चरन जनि भोरें॥*

अयोध्याकाण्ड

नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष दुःख दारिद दावा॥*
अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें। दीनदयाल अनुग्रह तोरें॥*
अब करि कृपा देहु बर एहू। निज पद सरसिज सहज सनेहू॥*
जोरि पानि बर मागउँ एहू। सीय राम पद सहज सनेहू॥*

अरण्यकाण्ड

जो कोसल पति राजिव नयना। करउ सो राम हृदय मम अयना॥*
अस अभिमान जाइ जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे॥*
यह बर मागउँ कृपा निकेता। बसहु हृदयें श्री अनुज समेता॥*

किष्किन्धाकाण्ड

जदपि नाथ बहु अवगुन मोरें। सेवक प्रभुहि परै जनि भोरें॥*
सेवक सुत पति मातु भरोसैं। रहइ असोच बनइ प्रभु पोसैं॥*
अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती। सब तजि भजन करौं दिन राती॥*

सुन्दरकाण्ड

नाथ भगति अति सुखदायनी। देहु कृपा करि अनपायनी॥*
अब मैं कुसल मिटे भय भारे। देखि राम पद कमल तुम्हारे॥*
अब कृपाल निज भगति पावनी। देहु सदा शिव मन भावनी॥*

लंकाकाण्ड

कृपा बारिधर राम खरारी। पाहि पाह प्रनतारति हारी॥*
जौं मन बच क्रम मम उर माहीं। तजि रघुवीर आन गति नाहीं॥*
दीन मलीन हीन मति जाती। मोपर कृपा कीन्हि बहु भाँती॥*

*प्रत्येक लाइन के बाद सीताराम-सीताराम बोलना है।

उत्तरकाण्ड

सर्व सर्वगत सर्व उरालय । बससि सदा हम कहूँ परिपालय ॥ *
 जौ करनी समुझै प्रभु मोरी । नहिं निस्तार कलप सत कोरी ॥ *
 असरन सरन विरदु संभारी । मोहि जनितजहु भगतहितकारी ॥ *
 मोरें तुम्ह प्रभु गुर पितु माता । जाउँ कहाँ तजिपद जल जाता ॥ *
 बालक ग्यान बुद्धि बल हीना । राखहु सरन नाथ जन दीना ॥ *
 राम चरन बारिज जब देखौ । तब निज जन्म सफल करि लेखौ ॥ *

*प्रत्येक लाइन के बाद सीताराम-सीताराम बोलना है।

बोझा

परमानन्द कृपायतन मन परिपूरन काम ।
 प्रेम भगति अनपायनी वेहु हमहि श्रीराम ॥
 अरथ न धरम न काम रुचि गति न चाहउँ निरवान ।
 जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन ॥
 मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुवीर ।
 अस बिचारि रघुवंस मनि हरहु विषम भवभीर ॥
 कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
 तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥



श्रीराम-स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ।
 नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणं ॥
 कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद सुंदरं ।
 पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥
 भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं ।
 रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं ॥
 सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग बिभूषणं ।
 आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥
 इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं ।
 मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं ॥



छंद

मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो ।
 करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥
 एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।
 तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥



सोरख

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
 मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥
 ॥ सियावर रामचन्द्र की जय ॥

आरती श्री सियावर की

नख सिख छवि घर की, आरती करिये सियावर की ॥टेक॥
लाल पीत अम्बर अति साजें, मुख निरखत सारद ससि लाजें ।
तिलक चिलक भालन पर राजें, कुंकुम केसर की ॥आरती०॥
सीस फूल कुण्डल झलकतु हैं, चन्द्रहार मोती हलकतु हैं ।
कर कंकन की छवि झलकतु हैं, जगमग दिनकर की ॥आरती०॥
मृदु तरुवन में अधिक ललाई, हास-बिलास न कुछ कहि जाई ।
चितवन की गति अति सुखदाई, मनहीं मन फरकी ॥आरती०॥
सिंहासन पर चँवर दुरतु हैं, साज बजत जै जै उचरतु हैं ।
आदर अस्तुतिदेव करतु हैं, लोटरनि अनुचर की ॥आरती०॥

ॐ

जगमग जगमग जोत जली है ।
राम आरती होन लगी है ॥
भक्ति का दीपक प्रेम की बाती ।
आरती संत करें दिन राती ॥
आनन्द की सरिता उभरी है ।
जगमग जगमग जोत जली है ॥
कनक सिंहासन सीय समेता ।
बैठहि राम होई चित चेता ॥
वाम भाग में जनक लली है ।
जगमग जगमग जोत जली है ॥
आरती हनुमत के मन भावे ।
राम कथा नित शंकर गावे ॥
सन्तों की ये भीड़ लगी है ।
जगमग जगमग जोत जली है ॥

ॐ

एक श्लोकी श्री विष्णु सहस्र नाम

यो मां नाम सहस्रेण स्तोतुमिच्छति पाण्डव ।
सोऽहमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न संशयः ॥
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये
सहस्रपादाक्षिशिरोरु बाहवे ।
सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते
सहस्र कोटि यग धारिणे नमः ॥

ॐ

नमः कमलनाभाय नमस्ते जल शायिने ।
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तुते ॥
वासनाद्वासु देवस्य वासितं भवनत्रयम् ।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तुते ॥
नमो ब्रह्मण्य देवाय ग्री ब्राह्मण हिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥
आकाशा त्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् ।
सर्वदेव नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति ॥

ॐ

गोविन्द दामोदर स्तोत्र (नामस्मरण)

संसार कूपे पतितोऽत्यगाधे मोहान्ध पूर्णे विषयाभि तप्ते ।
करावलम्बं मम देहि विष्णो गोविन्द दामोदर माधवेति ॥१॥
जिह्वे सदैवं भज सुन्दराणि नामानि कृष्णस्य मनोहराणि ।
समस्त भक्तार्ति विनाशनानि गोविन्द दामोदर माधवेति ॥२॥
गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण ।
गोविन्द गोविन्द रथाङ्ग पाणे गोविन्द दामोदर माधवेति ॥३॥

प्राणेश विश्वम्भर कैटभारे वैकुण्ठ नारायण चक्रपाणे ।
जिह्वे पिबस्वामृत मेत देव गोविन्द दामोदर माधवेति ॥४॥
हरे मुरारे मधुसूदनाद्य श्रीराम सीतावर रावणारे ।
जिह्वे पिबस्वामृत मेत देव गोविन्द दामोदर माधवेति ॥५॥
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव ।
जिह्वे पिबस्वामृत मेत देव गोविन्द दामोदर माधवेति ॥६॥

ॐ

गोविन्द षट्क स्तोत्र (विनय)

गोविन्द मेरी यह प्रार्थना है, भूलूँ न मैं नाम कभी तुम्हारा ।
निष्काम होके दिन रात गाऊँ, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति । हे कृष्ण ! हे यादव ! हे सखेति ॥१॥
देहान्त काले तुम सामने हो, वंशी बजाते मन को लुभाते ।
गाता यही मैं तन नाथ ! त्यागूँ, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति । हे कृष्ण ! हे यादव ! हे सखेति ॥२॥

चेतावनी

प्यारे जरा तो मन में विचारो, क्या साथ लाये अरु ले चलोगे ।
जावे यही साथ, सदा पुकारो, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति । हे कृष्ण ! हे यादव ! हे सखेति ॥३॥
नारी धरा धाम सुपुत्र प्यारे, सन्मित्र सद्बान्धव द्रव्य सारे ।
कोई न साथी, हरि को पुकारो, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति । हे कृष्ण ! हे यादव ! हे सखेति ॥४॥
नाता भला क्या जग से हमारा, आये यहाँ क्यों ? कर क्या रहे हैं ?
सोचो, विचारो, हरि को पुकारो, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ! हे कृष्ण ! हे यादव ! हे सखेति ॥५॥
सच्चे सखा हैं हरि ही हमारे, माता-पिता 'शील' सुबन्धु प्यारे ।
भूलो न भाई, दिनरात, गाओ, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ! हे कृष्ण ! हे यादव ! हे सखेति ॥६॥

ॐ

कमलनेत्र स्तोत्रम्

ॐ श्रीकमलनेत्र कटि पीताम्बर, अधर मुरली गिरिधरम् ।
 मुकुट कुण्डल कर लकुटिया, साँवरे राधेवरम् ॥ १ ॥
 कूल यमुना धेनु आगे, सकल गोपी मनहरम् ।
 पीतवस्त्र गरुड़ वाहन, चरण सुख नित सागरम् ॥ २ ॥
 करत केलि कलोल निशि दिन, कुञ्ज भवन उजागरम् ।
 अचल अमल अडोल निश्चल, पुरुषोत्तम अपरापरम् ॥ ३ ॥
 दीनानाथ दयाल गिरिधर, कंस हिरणाकुश हरम् ।
 गल फूल माल विशाल लोचन अधिक सुन्दर केशवम् ॥ ४ ॥
 बंशीधर वसुदेव छलिया, बलि छल्यो हरि वामनम् ।
 जल डूबते गज राखि लीनो, लंक छेद्यो रावणम् ॥ ५ ॥
 सप्त द्वीप नवखण्ड चौदह, भुवन कीनो इक पलम् ।
 त्रौपदी की लाज राखी, कहाँ लौं उपमा करम् ॥ ६ ॥
 दीनानाथ दयाल पूरण करुणामय करुणाकरम् ।
 कविदत्तदास विलास निशिदिन, नाम जप नित नागरम् ॥ ७ ॥
 प्रथम गुरु के चरण बन्दों, यस्य ज्ञान प्रकाशितम् ।
 आदि विष्णु युगादि ब्रह्मा, सेवितं शिव शंकरम् ॥ ८ ॥
 श्रीकृष्ण केशव, कृष्ण केशव, कृष्ण यदुपति केशवम् ।
 श्रीराम रघुवर राम रघुवर, राम रघुवर राघवम् ॥ ९ ॥
 श्रीराम कृष्ण गोविन्द माधव, वासुदेव श्रीवामनम् ।
 मच्छ कच्छ वराह नरसिंह, पाहि रघुपति पावनम् ॥ १० ॥
 मथुरा में केशवराय विराजे, गोकुल बालमुकुन्द जी ।
 श्री वृन्दावन में मदनमोहन, गोपीनाथ गोविन्द जी ॥ ११ ॥
 धन्य मथुरा धन्य गोकुल, जहाँ श्रीपति अवतरे ।
 धन्य यमुना नीर निर्मल, ग्वाल बाल सखा बरे ॥ १२ ॥
 नवनीत नागर करत निरतत, शिव विरञ्चि मनमोहितम् ।
 कालिन्दी तट करत क्रीड़ा, बाल अद्भुत सुन्दरम् ॥ १३ ॥

ग्वाल बाल सब सखा विराजें, संग राधे भामिनी ।
 वंशीवट तट निकट यमुना, मुरली टेर सुहावनी ॥ १४ ॥
 भज राधे श्याम मुरारि उत्तम, परम राजकुमार जी ।
 सीता पति रघुनाथ श्री पति जगत् प्राण आधार जी ॥ १५ ॥
 जनक राजा प्रण को राख्यो, धनुष बाण चढ़ावहीं ।
 सती सीता नाम जाके, श्री रामचन्द्र प्रणमामहीं ॥ १६ ॥
 जन्म मथुरा खेल गोकुल, नन्दके हृदि नन्दनम् ।
 बाललीला पतित पावन, देवकी वसुदेवकम् ॥ १७ ॥
 श्रीकृष्ण कलिमल हरण जाके, जो भजे हरि चरणको ।
 भक्ति अपनी देहु माधव, भवसागर के तरणको ॥ १८ ॥
 जगन्नाथ जगदीश स्वामी, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।
 श्री द्वारिका के नाथ श्रीपति, केशवं प्रणमाम्यहम् ॥ १९ ॥
 श्रीकृष्ण अष्टपद पढ़त निशिदिन, विष्णुलोक सगच्छते ।
 श्रीगुरु रामानन्द अवतार, कविदत्तदास सुभाषते ॥ २० ॥
 ॥ इति श्री कमलनेत्रस्तोत्रं समाप्तम् ॥

ॐ

भगवान राधाकृष्ण का ध्यान

जय कृष्ण मनोरम योग तरे,
 यदुनन्दन नन्द किशोर हरे ।
 जय राज राजेश्वरी पूर्ण नमे,
 वरदे वृषभानु किशोरि रमे ।
 नव नीरद सुन्दर नील तनुं,
 तडिदुज्ज्वल काञ्चन निन्दितनुम ।
 जगदादि गुरुं ब्रज रज सुतं,
 प्रणमामि सदा वृषभानु सुताम् ॥

ॐ

सप्तश्लोकी गीता

पद्यानुवाद

जो ॐ अक्षर ब्रह्म कह यक धार मुझको ध्यान में ।
 वह त्याग ऐसे देह जाता, परम धाम प्रधान में ॥ (८/१३)
 है योग्य ! तब अनुरक्त यशकर, हर्ष जग जन भर रहे ।
 भगते दिशन भयभीत राक्षस, सिद्ध संस्तुति कर रहे ॥ (११/३६)
 शिर नेत्र मुख कर पग श्रवण, सर्वत्र जिससे व्याप्त है ।
 सब विश्व में सुस्थित वही, सब ओर से पर्याप्त है ॥ (१३/१३)
 जो कवि अनादि नियन्तृकर, अणुतर व सब धातार है ।
 चिन्तन रहित सुमिरण करै, जो सूर्य सम तम पार है ॥ (८/९)
 है ऊर्ध्व जड़ शाखा अधः, अश्वत्थ अव्यय जो कहा ।
 भुति पत्र युत जानै इसे, वह वेद का ज्ञाता रहा ॥ (१५/१)
 सब प्राणियों में मैं बसा, स्मृति अपोहन ज्ञान हूँ ।
 वेदान्त कर्ता वेद वित् अरु वेद वेद्य महान हूँ ॥ (१५/१५)
 मन्मना मद्भक्त पूजन, नमन कर मम रीति से ।
 एकात्म होकर हो शरण, मुझमें मिलोगे प्रीति से ॥ (९/३४)
 (श्री हरि गीतामृत से)

ॐ

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
 तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥ (९/२६)
 सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज ।
 अहं त्वासर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ (१८/६६)
 अनन्यन्याशिचन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
 तेषां नित्याभियुक्तानां योग क्षेमं वहाम्यहम् ॥ (९/२२)

ॐ

श्री सत्यनारायण जी की आरती

जय लक्ष्मी रमणा श्री लक्ष्मी रमणा।
 सत्यनारायण स्वामी जनपातक हरणा॥ टेक॥
 रत्न जड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजे।
 नारद करत निराजन घण्टा-ध्वनि बाजे॥ जय०॥
 प्रकट भये कलि कारण द्विज को दरश दियो।
 बूढ़ो ब्राह्मण बनके कञ्चन महल कियो॥ जय०॥
 दुर्बल भील कठरो जिन पर कृपा करी।
 चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपत्ति हरी॥ जय०॥
 वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी।
 सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीनी॥ जय०॥
 भावभक्ति के कारण छिन-छिन रूप धर्यो।
 श्रद्धा कारण कीनी तिनको काज सर्यो॥ जय०॥
 ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी।
 मनवाञ्छित फल दीन्यो दीन दयाल हरी॥ जय०॥
 चढ़त प्रसाद सवायो कदली फल मेवा।
 धूप दीप तुलसी से राजी सत्यदेवा॥ जय०॥
 श्री सत्यनारायण जी की आरती जो कोई नर गावै।
 णणत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित फल पावै॥ जय०॥

ॐ

नमामि नारायण पाद पङ्कजं
 करोमि नारायण पूजनं सदा।
 वदामि नारायण नाम निर्मलं
 स्मरामि नारायण तत्त्वमव्ययम्॥

(पाण्डवगीता ६०)

ॐ

श्री लक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशिदिन सेवत, हर - विष्णू - धाता ॥ॐ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग - माता ।
सूर्य - चन्द्रमा ध्यावतु, नारद ऋषि गाता ॥ॐ॥
दुर्गारूप निरंजनि, सुख - सम्पत्ति - दाता ।
जो कोइ तुमको ध्यावतु, ऋधि-सिधि-धन पाता ॥ॐ॥
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभदाता ।
कर्म - प्रभाव - प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ॥ॐ॥
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता ।
सब संभव हो जाता, मन नहिं घबराता ॥ॐ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो राता ।
खान - पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ॐ॥
शुभ - गुण - मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि - जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहिं पाता ॥ॐ॥
महालक्ष्मी (जी) की आरति, जो कोइ नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ॐ॥

ॐ

या सा पद्मा सनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी ।
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभर नमिता शुभ्र वस्त्रोत्तरीया ॥
या लक्ष्मीर्दिव्य रूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिताहेम कुम्भैः ।
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्य युक्ता ॥

ॐ

श्री गंगाजी की आरती

ॐ जय गङ्गे माता श्री जय गङ्गे माता ।
 जो नर तुमको ध्याता, जो नर तुमको ध्याता ।
 मनवांछित फल पाता । ॐ जय गङ्गे माता ॥ १ ॥
 चन्द्र-सी ज्योति तुम्हारी जल निर्मल आता ।
 शरण पड़े जो तेरी, शरण पड़े जो तेरी ।
 मो नर तर जाता । ॐ जय गङ्गे माता ॥ २ ॥
 पुत्र सगर के तारे सब जग को ज्ञाता ।
 कृपा दृष्टि तुम्हारी, कृपा दृष्टि तुम्हारी ।
 त्रिभुवन सुख दाता । ॐ जय गङ्गे माता ॥ ३ ॥
 एक ही बार जो तेरी शरणागति आता ।
 यम की त्रास मिटाकर, यम की त्रास मिटाकर ।
 परम गति पाता । ॐ जय गङ्गे माता ॥ ४ ॥
 आरती मात तुम्हारी जो जन नित गाता ।
 दास वही सहज में, दास वही सहज में ।
 मुक्ति को पाता । ॐ जय गङ्गे माता ॥ ५ ॥



हरनि पाप त्रिविध ताप सुमिरत सुरसरित ।
 विलसति महि कल्प-बेलि मुद-मनोरथ-फरित ॥
 सोहत ससि-धवल धार सुधा-सलिल-भरित ।
 विमलतर तरंग लसत रघुवर के-से चरित ॥
 तो विनु जगदम्ब गंग कलिजुग का करित ।
 घोर भव अपार सिन्धु 'तुलसी' किमि तरित ॥



कुछ जानने योग्य बातें

१. ब्राह्ममुहूर्त (सूर्योदय से पूर्व) में उठना चाहिए। इस समय की निद्रा स्वास्थ्य एवं पुण्य विनाशनी होती है।
२. प्रातःकाल उठते ही स्वकर (हाथों की हथेलियों) का दर्शन करना तथा माता-पिता, गुरु तथा बड़ों को प्रणाम करना चाहिए। इससे आयु, विद्या, यश तथा बल में वृद्धि होती है।
३. अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा, जल, ब्राह्मण, गौ और वायु के सामने मल-मूत्र नहीं करना चाहिए।
४. मध्यमा, अनामिका या अँगूठे से मञ्जन करें तर्जनी से नहीं।
५. नित्य स्नान न करनेवाला अपवित्र रहता है। वह जप, पूजा, हवन आदि के अयोग्य रहता है।
६. सन्ध्या प्रातः सूर्योदय से पूर्व, मध्याह्न में सूर्य रहते हुए, सायं सूर्यास्त के बाद तारा उदय से पूर्व करनी चाहिए।
७. सन्ध्या, पूजन तथा पितृकार्य (श्राद्ध) में सदा दो बिना सिला वस्त्र (अधोवस्त्र, ऊर्ध्ववस्त्र) धारण करना चाहिए।
८. देवपूजन में यज्ञोपवीत बायें कंधे पर (सव्य) और पितृकार्य में दायें कंधे पर (अपसव्य) तथा कंधे पर रखा गमछ भी इसी प्रकार रखना चाहिए।
९. कुशे एवं अङ्गुलियों के अग्रभाग से देवताओं का, कुशे के मध्यभाग एवं कनिष्ठ के मूलभाग से मनुष्यों (ऋषि) का तथा कुशे के अग्र एवं अंतिम भाग (मोटक) से तर्जनी के मूल से पितृ तर्पण करना चाहिए।
१०. जल में शुष्क वस्त्र और स्थल पर गीले वस्त्र से उपासना न करें। गीले पैर भोजन करें पर गीले पैर सोयें नहीं।
११. बिना तिलक धारण किए श्राद्ध, सन्ध्या, देवपूजन नहीं करना चाहिए। पत्थर पर धिसे चन्दन को पात्र में उठकर उससे तिलक लगाना चाहिए।
१२. आसन कम्बल का, काले हिरन की खाल का, व्याघ्रचर्म का या कुशा का होना चाहिए।

१३. भूमि पर बैठकर जप करने से दुःख, बाँस के आसन से दरिद्रता, पत्थर पर व्याधि, काष्ठ पर दुर्भाग्य, यशनाश एवं पत्ते पर चित्तभ्रम होता है।

१४. जप के बाद आसन के नीचे की मिट्टी मस्तक पर लगानी चाहिए। ऐसा न करने पर जप का फल नहीं मिलता।

१५. हाथों की अंगुलियों के पर्व, अक्षत, धान्य, पुष्प, चन्दन या मृत्तिका से जप की गणना न करें।

१६. रुद्राक्ष की माला १०८ दाने की, ५४ दाने की अथवा २७ दाने की होनी चाहिए। इससे कम अधम कही गयी है। माला के दानों के बीच ग्रन्थि होनी चाहिए।

१७. माला गोमुखी में अनामिका अंगुली पर रख अंगूठे और मध्यमा अंगुली से फेरना चाहिए। तर्जनी से नहीं। जप में सुमेरु का उल्लंघन न करें। एक माला समाप्त होने पर माला को घुमा कर जप करना चाहिए।

१८. कुशा के अग्रभाग से देवताओं पर जल नहीं छिड़के।

१९. देवताओं को अनामिका अंगुली से तिलक लगाना चाहिए।

२०. दुर्गा देवी, सूर्य, गणेश को लाल वस्त्र, विष्णु को पीला वस्त्र एवं शिव को श्वेत वस्त्र चढ़ाना चाहिए।

२१. देवपूजन में घृत का दीपक बायीं ओर और तेल का दीपक दायीं ओर रखना चाहिए। एक दीपक से दूसरा दीपक जलाने से दरिद्रता आती है। दीपक बुझायें नहीं। केवल श्राद्ध का दीप बुझाया जाता है।

२२. पत्र, पुष्प, फल का मुख नीचे करके नहीं चढ़ाना चाहिए। जैसे उत्पन्न होते हैं वैसे ही चढ़ावें। विल्वपत्र डंडी तोड़कर उलटा चढ़ाना चाहिए।

२३. कमल, विल्वपत्र, तुलसी, गंगा जल वासी होने पर भी दूषित नहीं होते। जल में डुबाकर रखे पुष्प त्याज्य हैं। इनसे पूजा नहीं करनी चाहिए।

२४. शिव को विल्वपत्र, विष्णु को तुलसी, दुर्गा को दूर्वा, सूर्य को लाल कनेर चढ़ाना चाहिए।

२५. शिव को कुन्द, केतकी, विष्णु को धतूरा, देवी को मदार, सूर्य को तगर का पुष्प नहीं चढ़ाना चाहिए।

२६. विष्णु को चावल, गणेश को तुलसी, दुर्गा को दूर्वा, सूर्य को विल्वपत्र नहीं चढ़ाना चाहिए।

२७. विष्णु आरती चरणों की चार, नाभी की दो, मुख की एक या तीन तथा समस्त अंगों की सात बार करनी चाहिए।

२८. पूजन में स्नान, धूप, दीप, नैवेद्य तथा आरती के समय घण्टा बजाना चाहिए। घण्टा बजाने से राक्षसों का गमन एवं देवताओं का आगमन होता है।

२९. गणेश की एक, सूर्य की दो, ईश्वर की तीन, विष्णु की चार तथा पीपल की सात बार प्रदक्षिणा करें।

३०. चण्डी की एक, सूर्य की सात, गणेश की तीन, विष्णु की चार प्रदक्षिणा करनी चाहिए। प्रदक्षिणा में देवमूर्ति दाहिने रहनी चाहिए।

३१. शिवलिङ्ग के दक्षिण की ओर बैठकर पूजन करना चाहिए। शिव की गर्भगृह में आधी परिक्रमा होती है। शिव निर्मात्य लांघना नहीं चाहिए।

३२. द्रव्य, अन्न, फल, जल, शिवलिङ्ग पर चढ़ाया हुआ निर्मात्य हो जाता है। इसके ग्रहण का निषेध है, परन्तु शालग्राम शिला से स्पर्श किया हुआ ग्रहण किया जा सकता है। जिस लिङ्ग में चण्डाधिकार होता है यह निषेध उन्हीं के लिए है।

३३. स्वयंभूलिङ्ग, बाणलिङ्ग, रसलिङ्ग, शालिग्रामी नदी (गण्डकी) से उत्पन्न लिङ्ग, नर्मदा नदी से प्राप्त लिङ्ग (नार्मदलिङ्ग), सिद्धों द्वारा स्थापित लिङ्ग एवं ज्योतिर्लिङ्ग में चण्डाधिकार नहीं होता। इनका प्रसाद भक्ष्य योग्य है।

३४. घर में दो लिङ्ग, दो शालग्राम, दो द्वारिका चक्र, दो सूर्य, तीन शक्ति, तीन गणेश, दो शङ्ख (जल चढ़ाने वाला) एवं खण्डित प्रतिमा की पूजा नहीं करनी चाहिए।

३५. खण्डित शालग्राम शिला चर्कांकित होने पर पूज्य है। शालग्राम में सम में दो का पूजन नहीं होता। विषम में एक का पूजन होता है। शालग्राम १, ४, ६, ८ आदि सम संख्या पूज्य है। शालग्राम में आवाहन विसर्जन नहीं होता। प्राण-प्रतिष्ठा भी नहीं होती।
३६. मल, मूत्र, मैथुन, दन्तधावन, श्राद्ध, भोजन के समय मौन रहें।
३७. अपने हाथ का लिखा स्तोत्र पढ़ने तथा अपने हाथ की गुथी माला पर जप करने का कोई फल नहीं होता।
३८. पान की डण्डी, अग्रभाग, शिरा तोड़कर खाना चाहिए।
३९. जल, फल, मूल, दूध, हवि, औषधि, ब्राह्मण की इच्छा, गुरु वचन से व्रत भङ्ग नहीं होता।
४०. बालक, वृद्ध, रोगी, गर्भिणी को उपवास नहीं करना चाहिए।
४१. पाद्य-श्यामाक (साँवा), दूर्वा, कमल, विष्णुकान्ता औषधि तथा जल से बनता है।
४२. अर्घ्य-फूल, अक्षत, जौ, कुशाग्र, तिल, सरसों, गंध तथा दूर्वादल से बनता है।
४३. मधुपर्क-दही १, शहद २, घी १ भाग मिलाने से। शहद के अभाव में गुड़ ले सकते हैं।
४४. दुग्धत्रितय-दूध, दही, घृत।
४५. मधुरत्रय-घी, दूध, शहद।
४६. पञ्चदेव-सूर्य, गणेश, शक्ति, शिव, विष्णु।
४७. पञ्चोपचार-गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।
४८. पञ्चपल्लव-पीपल, गूलर, आम, बट, पाकर या अशोक।
४९. पञ्चगव्य-गोमूत्र, गोबर, दूध, दही, घृत।
५०. पञ्चामृत-गौ का दूध, दही, घृत, चीनी, शहद।
५१. पञ्चमेवा-चिरौजी, किसमिस, छुहारा, मखाना, गरी।
५२. पञ्चरत्न-सोना, हीरा, नीलम, पुखराज, मोती।
५३. पञ्चधान्य-तिल, जौ, मूँग, उड़द, चावल।
५४. सप्तधान्य-चावल, जौ, गेहूँ, मूँग, उड़द, तिल, कांगनी।
५५. सप्तमृत्तिका-घुड़शाला, हाथीशाला, गौशाला, राजद्वार, चौरस्ता, नदी का संगम, वल्मीकि (दीमक) की मिट्टी।

५६. षडङ्ग—हृदय, मस्तक, शिखा, दोनों नेत्र, दोनों भुजा,
परस्पर कर स्पर्श।
५७. अष्टदान—कपास, नमक, घी, सप्तधान्य, सुवर्ण, लौह, पृथ्वी,
गौ।
५८. नवरत्न—माणिक, मोती, मूँगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम, गोमेद, वैदूर्य।
५९. नवग्रह—सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राह,
केतू।
६०. नवदुर्गा—शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चित्रघंटा, कुष्माण्ड,
स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्री, महागौरी, सिद्धि-
दातृमाता।
६१. नवगौरी—मुखनिर्मालिका, ज्येष्ठागौरी, सौभाग्यगौरी, शृंगार-
गौरी, विशालाक्षी, ललिता, भवानी, मंगलागौरी,
महालक्ष्मी।
६२. नवसमिधा—आक, ढाक, खैर, अपामार्ग, पीपल, गूलर, शमी,
दूर्वा, कुश।
६३. दशमहादान—गौ, भूमि, तिल, सुवर्ण, घी, वस्त्र, धान्य, गुड़,
चाँदी, लवण।
६४. दशौषधि—मुरा, जटामासी, वच, कूठ, शिलाजीत, हल्दी, दारु-
हल्दी, आमला, श्वेतचन्दन, नागरमोथा।
६५. दश अवतार—मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परसुराम,
राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि।
६६. १२ मास देवता—अगहन (केशव), पौष (नारायण), माघ
(माधव), फाल्गुन (गोविन्द), चैत्र (विष्णु), वैशाख
(मधुसूदन), ज्येष्ठ (त्रिविक्रम), आषाढ़ (वामन), सावन
(श्रीधर), भादो (हृषीकेश), क्वार (पद्मनाभ), कार्तिक
(दामोदर)।
६७. षोडशोपचार—आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान,
वस्त्र, यज्ञोपवीत, चन्दन, माल्य, धूप, दीप, नैवेद्य,
नमस्कार, प्रदक्षिणा, विसर्जनया शय्या।

६८. ३३ कोटि देवता—आठवसु, ग्यारह रुद्र, द्वादश आदित्य, इन्द्र, प्रजापति या २ अश्विनीकुमार—नासत्य, दस्र ।
 ६९. आठ वसु—धर, ध्रुव, सोम, आप, अनल, अनिल, प्रत्यूष, प्रभास ।
 ७०. ग्यारह रुद्र—कपाली, पिङ्गल, भीम, विरूपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, अहिर्बुध्न्य, शम्भु, चण्ड, भव ।
 ७१. द्वादश आदित्य—धाता, अर्यमा, मित्र, वरुण, अंश, भग, इन्द्र, विवस्वान्, पूषा, पर्जन्य, त्वष्ठा, विष्णु ।
 ७२. अठ्ठरह पुराण—ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिङ्ग, वाराह, स्कन्द, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़, ब्रह्माण्ड ।

ॐ

दुःस्वप्न निवारण मंत्र

अविमुक्त चरयुगलं दक्षिण मूर्तेश्च कुक्कुट चतुष्कम् ।
 स्मरणमपि वाराणस्यां निहन्ति दुःस्वप्नमप शकुनंच ॥

(काशी दर्पण)

ॐ

ॐ अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सत्यं जनार्दनम् ।
 हंसं नारायणं चैव ह्येतन्नामाष्टकं शुभम् ॥
 शुचिः पूर्व मुखः प्राज्ञो दशकृत्वश्य यो जपेत् ।
 निष्पापोऽपि भवेत्सोऽपि दुःस्वप्नः शुभवान् भवेत् ॥

(ब्र. वै. श्रीकृष्ण.)

पाप रहित होने तथा दुःस्वप्न को शुभ बनाने के लिए अच्युत, केशव, विष्णु, हरि, सत्य, जनार्दन, हंस और नारायण इन आठों नामों का पूर्वाभिमुख बैठकर १० बार जप करना चाहिए ।

ॐ

गीता सार

१—क्यों व्यर्थ चिन्ता करते हो, किससे डरते हो, कौन तुम्हें मार सकता है, आत्मा न पैदा होती है, न मरती है।

२—जो हुआ सो अच्छा हुआ, जो हो रहा है सो अच्छा हो रहा है, होगा सो अच्छा होगा/तुम भूत की चिन्ता न करो, भविष्य की चिन्ता न करो, वर्तमान चल रहा है।

३—तुम्हारा क्या गया जो रोते हो, तुम क्या लाये थे जो खो दिया, तुमने क्या पैदा किया था जो नाश हो गया, न तुम कुछ लेके आये, जो लिया यहीं से लिया, जो दिया यहीं पर दिया, जो लिया इससे लिया, जो दिया इसी को दिया, खाली हाथ आये थे सो खाली हाथ चले, जो आज तुम्हारा है कल किसी और का होगा, तुम इसे अपना समझकर मगन होते हो, बस यही प्रसन्नता तुम्हारे दुःख का कारण है।

४—परिवर्तन संसार का प्राण है, जिसे तुम मृत्यु समझते हो, यही तो जीवन है, एक क्षण करोड़ों के स्वामी होते हो, क्षण में कङ्काल हो जाते हो, मेरा तेरा छोटा, बड़ा, अपना, पराया दिल से मिटा दो, विचार से मिटा दो, फिर सब तुम्हारे हैं और तुम सबके हो।

५—न यह शरीर तुम्हारा है न तुम इसके हो, यह आग, पानी, मिट्टी, हवा से बना है, और उन्हीं में मिल जाता है, फिर भी तुम्हारा अस्तित्व स्थिर है फिर तुम क्या हो?

६—तुम अपने आपको सबके पिता को अर्पित करो यही सबसे उत्तम सहारा है। जो उस सहारे को जानता है वह भय, शोक, चिन्ता से मुक्त है।



महापुरुषों की उक्तियाँ

१. वही उन्नति कर सकता है जो स्वयं अपने को उपदेश दे सकता है।
२. शब्दों की अपेक्षा कर्म अधिक जोर से बोलते हैं।
३. भाग्य का दूसरा नाम विचार है। जैसा आप सोचते हैं वैसे ही बन जाते हैं।
४. अपने काम को चौद, तारों और सूरज के काम की तरह निःस्वार्थ बना दें, तभी सफलता मिलेगी।
५. जीवित कौन है? जो सत्य के लिये हर वक्त मरने को तैयार हो।
६. नियमों का निर्माण मनुष्य के लिये हुआ है। मनुष्य का निर्माण नियमों के लिये नहीं।
७. विश्व राम का शरीर है। —रामतीर्थ
८. यद्यपि कहा जाता है विरह में प्रेम कुम्हला जाता है तथापि वस्तुतः वियोग में प्रेम का प्रयोग न होने से वह संचित होकर राशिभूत हो जाता है।
९. फल के आने से वृक्ष झुक जाते हैं, नव वर्षा के समय बादल झुक जाते हैं, सम्पत्ति के समय सज्जन नम्र हो जाते हैं—परोपकारियों का स्वभाव ही ऐसा है। —कालिदास
१०. मोह और स्वार्थ अज्ञान के पुत्र हैं, अतः अज्ञानी मनुष्य ही दुष्ट और कायर होते हैं।
११. घृणा पाप से करो, पापी से नहीं।
१२. ठेकर लगे और दर्द हो तभी मैं सीख पाता हूँ।
१३. दुनियाँ में प्रसन्न रहने का एक ही उपाय है और वह यह कि अपनी जरूरतें कम करो।

१४. भय केवल हमारी कल्पना की उपज है। धन, परिवार और शरीर का मोह तज दो, फिर देखो भय कहाँ रहता है।

—महात्मा गांधी

१५. किसी से शत्रुता या बैर करना अपने विकास को रोकना है।

१६. डूबने वाले के साथ सहानुभूति का अर्थ यह नहीं कि उसके साथ डूब जाओ बल्कि तैरकर उसे बचाने का प्रयत्न करो।

—बिनोबा

१७. मैं और मेरा अज्ञान है। तू और तेरा ज्ञान है।

१८. प्रेम के दो लक्षण हैं, पहला बाहरी संसार को भूल जाना दूसरा अपने आप को भूल जाना।

१९. ईश्वर सब लोगों में है लेकिन सब लोग ईश्वर में नहीं हैं। इसलिये वे दुःखी हैं।

२०. क्या प्रार्थनाओं का सचमुच कोई प्रभाव है ? हाँ जब मन और वाणी एक होकर कोई चीज माँगते हैं तो उस प्रार्थना का जवाब जरूर मिलता है।

—रामकृष्ण परमहंस

२१. एक बात जो मैं दिन की तरह स्पष्ट देखता हूँ यह है कि दुःख का कारण अज्ञान है।

२२. भय से ही दुःख आते हैं, भय से मृत्यु होती है और भय से ही बुराइयाँ उत्पन्न होती हैं।

२३. मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोच्च साक्षात् मंदिर है, इसलिये साकार देवता की पूजा करो।

२४. अपवित्र कल्पना भी उतनी ही बुरी है जितना बुरा अपवित्र कर्म।

२५. प्रार्थना द्वारा कुछ माँगना है तो ऐसी कोई चीज मत माँगो जो बिनाशी है।

२६. “दुनिया क्या कहेगी” मुझ पर कोई हँसेगा क्या ? ऐसे दुर्बल विचारों को न आने देकर अपने को योग्य लगे वैसा काम हमेशा करना चाहिये। यही सारे जीवन का रहस्य है।

२७. अत्यन्त आशाजनक स्थिति भावी अभीष्ट की जननी है।

२८. स्त्रियों की अवस्था में सुधार न होने तक विश्व के कल्याण का कोई मार्ग नहीं। किसी पक्षी के एक पंख के सहारे उड़ना नितान्त असम्भव है।
—स्वामी विवेकानन्द
२९. इससे बड़ी और कोई घातक भूल नहीं हो सकती कि हम मंजिल को मकसूद समझ लें वा किसी पड़ाव पर अधिक देर तक ठहरे रहें।
३०. प्रेम ही एक ऐसी चीज है जो निष्काम और स्वतन्त्र रह सकती है।
—संत अरविंद
३१. अविनय मनुष्य को शोभा नहीं देता, चाहे उसका इस्तेमाल अन्यायी व विपक्षी के प्रति ही क्यों न हो।
३२. इच्छा कभी तृप्त नहीं होती किन्तु अगर कोई मनुष्य उसको त्याग दे तो वह उसी क्षण सम्पूर्णता को प्राप्त कर लेती है।
३३. उत्साह आदमी की भाग्यशीलता का पैमाना है।
३४. यदि तुम्हें किसी बात की कामना करनी ही है तो जन्मों के चक्र से छुटकारा पाने की कामना करो और वह छुटकारा तभी मिलेगा जब तुम कामना को जीतने की कामना करोगे।
३५. और किसी को चाहे तुम मत रोको मगर अपनी जबान को लगाम दो क्योंकि बेलगाम जबान बहुत दुःख देती है।
३६. उन्हें वफादार न मान जो तेरी हर कथनी और करनी की प्रशंसा करें, बल्कि उन्हें मान जो तेरे दोषों की मृदुल आलोचना करें।
३७. मनुष्य ठीक उसी मात्रा में महान् बनता है जिस मात्रा में वह मानवमात्र के कल्याण के लिये श्रम करता है।
३८. संसार में आदरपूर्वक जीने का सबसे सरल और शर्तीला उपाय यह है कि हम जो कुछ बाहर से दिखाना चाहते हैं वैसे ही वास्तव में भी हों।
३९. संतोष कुदरती दौलत है, ऐश्वर्य कृत्रिम दौलत है।

४०. हमने भोग नहीं भोगे, भोगों ने हमें भोग लिया है।
४१. संसार में तीन प्रकार के मनुष्य हैं—नीच, मध्यम और उत्तम। नीच मनुष्य विघ्न के भय से काम शुरू ही नहीं करते, मध्यम मनुष्य काम शुरू तो कर देते हैं किन्तु विघ्न आते ही उसे बीच में ही छोड़ देते हैं परन्तु उत्तम मनुष्य जिस काम को आरंभ कर देते हैं उसे विघ्न पर विघ्न आने पर भी पूरा करके छोड़ते हैं।
४२. विपदकाल में धैर्य, ऐश्वर्य में क्षमा, सभा में वचन चातुरी, संग्राम में पराक्रम, सुयश में अभिरुचि और शास्त्रों में व्यसन—ये गुण महापुरुषों में स्वभाव से ही होते हैं।
४३. कान की शोभा शास्त्र श्रवण से है, कुंडल से नहीं, हाथ की शोभा दान से है, कंकण से नहीं, मनुष्य के शरीर की शोभा परोपकार से है, चन्दन से नहीं।
४४. महत्ता के सुमन में नम्रता व उदारता का सौरभ ही शोभा पाता है।
—भर्तृहरि
४५. देखकर पाँव रखे, छानकर पानी पिये, सच बोले और मन से पवित्र आचरण करे।
४६. तमाम पवित्र चीजों में धन कमाने में पवित्रता सर्वोत्तम है।
४७. भोग करने से भोग की इच्छा नहीं बुझती।
४८. जो धन का स्वामी है, पर इंद्रियों का नहीं, वह इंद्रियों को वश में न रखने से धन से भ्रष्ट हो जाता है।
४९. जो धनी होकर दान न करे और निर्धन होकर तप न करे उसे गले में पत्थर बाँधकर डुबा देना चाहिए।
—विदुर
५०. क्षमा ब्रह्म है, क्षमा सत्य है, क्षमा भूत है, क्षमा भविष्य है, क्षमा तप है और क्षमा पवित्रता है, क्षमा ने ही संपूर्ण जगत् को धारण कर रखा है।
५१. विद्या के सदृश कोई चक्षु नहीं है।
५२. मनुष्य दूसरों के द्वारा जिस व्यवहार को अपने लिये पसंद

नहीं करता, उस अप्रिय व्यवहार को दूसरों के साथ न करे।

५३. शत्रु, ऋण और अग्नि को कभी थोड़ा नहीं समझना चाहिये।
—वेदव्यास

५४. जीव का एक क्षण करोड़ स्वर्ण मुद्रायें देने पर भी नहीं मिलता।

५५. गुणों से मनुष्य महान् होता है, ऊँचे आसन पर बैठने से नहीं। महल के ऊँचे शिखर पर बैठने से कौवा गरुड़ नहीं हो सकता।

५६. शान्ति के समान कोई तप नहीं है, संतोष से बढ़कर कोई सुख नहीं है, तृष्णा से बढ़कर कोई व्याधि नहीं है, दया के समान कोई धर्म नहीं है।

५७. मित्र की परीक्षा तब होती है, जब आपत्ति का समय हो, या जब ऋण देने का प्रश्न आता है। परन्तु वास्तविक परीक्षा इसके पश्चात् आरम्भ होती है। जबकि ऋण चुकाने का प्रश्न आता है।

५८. ये चार चीजें जाकर फिर नहीं लौटती—

१—छूटा हुआ तीर, २—मुँह से निकली बात,

३—गया हुआ समय और ४—टूटा हुआ दिल।

५९. दान, क्षमा, संयम, संतोष, नम्रता, सच्चाई और दया ये सात साधन वैकुण्ठ के हैं।
—हितोपदेश

६०. भौंकते हुये कुत्ते को अगर ठोकर मारो तो और भी भौंकेगा। उसकी तरफ बिल्कुल ही ध्यान न दो तो वह चुप हो जायेगा।

६१. न उधार दो और न उधार लो—क्योंकि उधार देने से अक्सर पैसा और मित्र दोनों खो जाते हैं।

६२. गुस्से में हो तो दस तक गिनो, अगर बहुत गुस्से में हो तो सौ तक।
—जफरशान

६३. सच्चे कुलीन सज्जन में ये चार गुण पाये जाते हैं हँसमुख चेहरा, उदार हाथ, मृदु भाषण और स्निग्ध निरभिमान।
—तिरुवल्लुवर

६४. चार हजार वचनों में से मैंने चार गुण चुने हैं—जिन में से दो को सदा स्मरण रखना चाहिये यानी मालिक और मौत, और दो को भूल जाना चाहिये यानी भलाई जो तू किसी के साथ करे, व बुराई जो कोई तेरे साथ करे। —नारायण

अमर सन्देश

- १ ईश्वरोपासना अमृत है, और प्रकृति की उपासना ही मृत्यु है।
- २ धर्म जीवन है और अधर्म ही मृत्यु है।
- ३ प्रेम जीवन है और मोह ही मृत्यु है।
- ४ परोपकार जीवन है और स्वार्थ ही मृत्यु है।
- ५ संतोष जीवन और लोभ ही (तृष्णा) मृत्यु है।
- ६ विद्या जीवन है और अविद्या ही मृत्यु है।
- ७ पुरुषार्थ जीवन है और आलस्य ही मृत्यु है।
- ८ भक्ति जीवन है और आसक्ति ही मृत्यु है।
- ९ उदारता जीवन है और कृपणता ही मृत्यु है।
- १० ब्रह्मचर्य जीवन है और व्यभिचार ही मृत्यु है।
- ११ वीरता जीवन है और कायरता ही मृत्यु है।
- १२ पवित्रता जीवन है और अपवित्रता ही मृत्यु है।
- १३ वैराग्य जीवन है और राग ही मृत्यु है।
- १४ निष्कामता जीवन है और सकामता ही मृत्यु है।
- १५ कर्मण्यता जीवन है और अकर्मण्यता ही मृत्यु है।
- १६ सत्य जीवन है और क्रोध ही मृत्यु है।
- १७ दया जीवन है और क्रोध ही मृत्यु है।
- १८ विवेक जीवन है और अविवेक ही मृत्यु है।
- १९ मैत्रीभावना जीवन है और घृणा ही मृत्यु है।
- २० अनासक्ति जीवन है और आसक्ति ही मृत्यु है।
- २१ निर्वैरक्त जीवन है और वैरक्त भाव ही मृत्यु है।
- २२ अहिंसा जीवन है और हिंसा ही मृत्यु है।



(शिक्षा)

- १ आसक्ति करनी हो तो भगवान् के नामरूप में करो ।
- २ कामना करनी हो तो निर्मल भजन की करो ।
- ३ क्रोध करना हो तो अपने दुर्गुणों पर करो ।
- ४ लोभ करना हो तो भगवान् के स्मरण का करो ।
- ५ मोह करना हो तो भगवान् की लीला में करो ।
- ६ मद करना हो तो भगवान् की प्रीति का करो ।
- ७ अभिमान करना हो तो भगवान् के दासत्व का करो ।
- ८ वैर करना हो तो अपने दुराचारों से करो ।
- ९ हिंसा करनी हो तो अपने अज्ञान की करो ।
- १० समीप रहना हो तो भगवच्चरणों के रहो ।
- ११ दूर रहना हो तो बुरे संग से रहो ।
- १२ दोषान्वेष करना हो तो अपने मन का करो ।
- १३ प्रीति करनी हो तो भगवच्चरणारविन्दों में करो ।
- १४ घृणा करनी हो तो अपने दोषों से करो ।
- १५ मैत्री करनी हो तो प्रभु प्रेमियों की करो ।

ॐ

राम नाम की माला

राम	राम	राम	राम	राम	राम ।	१ ।
राम	राम	राम	राम	राम	राम ।	२ ।
राम	राम	राम	राम	राम	राम ।	३ ।
राम	राम	राम	राम	राम	राम ।	४ ।
राम	राम	राम	राम	राम	राम ।	५ ।

इसी क्रम से १०८ बार पाठ करें ।



माँ शारदे

माँ शारदे ! कहाँ तू वीणा बजा रही है।

किस मञ्जु ज्ञान से तू जग को लुभा रही है ॥

किस भाव में भवानी तू मग्न हो रही है।

बिनती नहीं हमारी क्यों मात सुन रही है ॥

हम दीन बाल कब से बिनती सुना रहे हैं।

चरणों में तेरे माता हम सिर नवा रहे हैं ॥

अज्ञान तुम हमारा माँ शीघ्र दूर कर दो।

द्रुत ज्ञान शुभ्र हममें माँ शारदे तू भर दे ॥

बालक सभी जगत् के सुत मात हैं तिहारे।

प्राणों से प्रिय तुझे हैं हम पुत्र सब दुलारे ॥

हमको दयामयी तू ले गोद में पढ़ाओ।

अमृत जगत् का हमको माँ शारदे पिलाओ ॥

मातेश्वरी तू सुन ले सुन्दर विनय हमारी।

करके दया तू हर ले बाधा जगत् की सारी ॥

प्रार्थना

वह शक्ति हमें दो दया निधे,
कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर सेवा पर उपकार में हम,
जन-जीवन सफल बना जावें।
हम दीन-दुखी निबलों विकलों,
के सेवक बन सन्ताप हरे।
जो हैं अटके भूले भटके,
उनको तारें खुद तर जावें।
छलदम्भ द्वेष पाखण्ड झूठ,
अन्याय से निस दिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना,
सुचिप्रेम सुधानित बरसावें।
निज आन-मान मर्यादा का,
प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश जाति ने जन्म दिया,
बलिदान उसी पर हो जावें॥

